दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik aslizadidainikofficial

असली आज़ादी

■ वर्षः 21, अंकः 323 ■ दमण, सोमवार 14, सितंबर 2026 ■ पृष्ठः 8 ■ मूल्यः 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

महिंद्रा समूह के अध्यक्ष आनंद महिंद्रा ने दमण में हुए बदलाव की शेयर की तस्वीरें

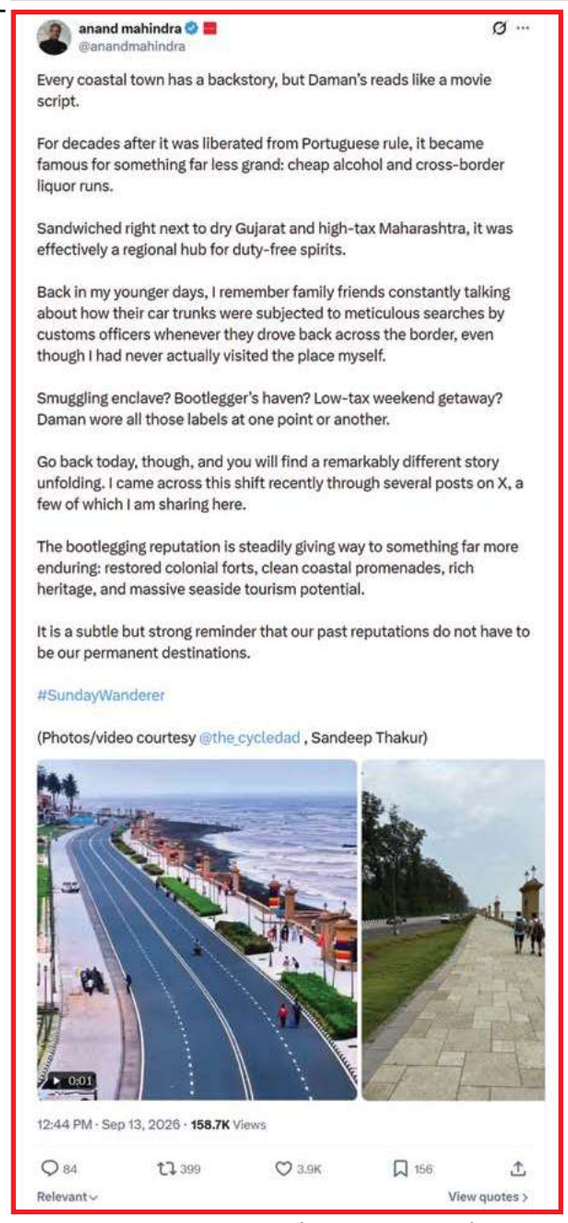

■ महिंद्रा समूह के अध्यक्ष आनंद महिंद्रा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर नमो पथ, रामसेतु और किला एरिया का वीडियो / तस्वीरें शेयर कर दमण के विकास के बाद बढ़ी खूबसूरती को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया ■ सोशल प्लेटफॉर्म X पर लिखा कि याद दिलाने वाली बात है कि हमारी पुरानी रेप्युटेशन ही हमारी परमानेंट डेस्टिनेशन नहीं होनी चाहिए

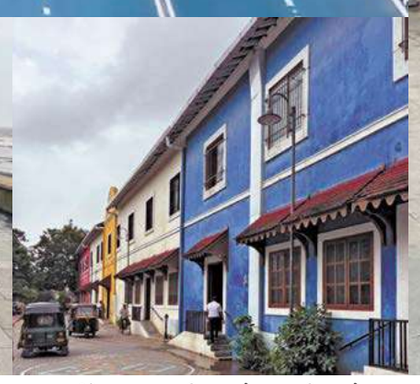

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 13 सितंबर। महिंद्रा समूह, महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड और टेक महिंद्रा लिमिटेड के अध्यक्ष आनंद महिंद्रा ने दमण में हुए विभिन्न क्षेत्रों में विकास की सराहना की है। उन्होंने काफी वर्षों पहले के दमण की तुलना में अब के दमण को बेहतर बताया है। आनंद महिंद्रा ने सोशल प्लेटफॉर्म एक्स (X) पर दमण के पर्यटन स्थलों की वीडियो और तस्वीरें एवं वीडियो शेयर किया है और कैप्शन भी लिखा है। उन्होंने एक्स पर शेयर किया है कि हर तटीय शहर की एक बैकस्टोरी होती है, लेकिन दमण की कहानी किसी फिल्म की स्क्रिप्ट जैसी है। पुर्तगाली शासन से आज़ाद होने के कई दशकों बाद, यह कुछ कम शानदार चीज़ों सस्ती शराब और बॉर्डर पार शराब की सप्लाई के लिए मशहूर हो गया।

शराबबंदी वाले राज्य गुजरात और ज्यादा टैक्स वाले महाराष्ट्र के ठीक बगल में यह असल में ड्यूटी-फ्री स्पिरिट्स का एक रीजनल हब था। अपने जवानी के दिनों में मुझे याद है कि फैमिली फ्रेंड्स लगातार इस बारे में बात करते थे कि जब भी वे बॉर्डर पार करके वापस आते थे, तो कस्टम ऑफिसर उनकी कार की डिक्की की बहुत बारीकी से तलाशी लेते थे, जबकि मैं खुद कभी उस जगह पर नहीं गया था।

स्मगलिंग का अड्डा? बूटलेगरों का अड्डा? कम टैक्स वाला वीकेंड गेटअवे? दमण पर कभी न कभी ये सभी लेबल लगे थे।

लेकिन, आज पीछे मुड़कर देखें, तो आपको एक बहुत ही अलग कहानी सामने आएगी। मुझे हाल ही में एक्स पर कई पोस्ट के जरिए इस बदलाव के बारे में पता चला, जिनमें से कुछ मैं यहाँ शेयर कर रहा हूँ। बूटलेगिंग की रेप्युटेशन धीरे-धीरे कुछ ज्यादा पक्की चीजों को रास्ता दे रही है। ठीक किए गए कॉलोनियल किले, साफ-सुथरे कोस्टल घूमने की जगहें, रिच हेरिटेज और समुद्र किनारे टूरिज्म की बहुत ज्यादा संभावना। यह एक हल्की लेकिन मजबूत याद दिलाने वाली बात है कि हमारी पुरानी रेप्युटेशन ही हमारी परमानेंट डेस्टिनेशन नहीं होनी चाहिए।

श्री पश्चिम भारत माछी समाज महासंघ की वार्षिक सामान्य सभा 2025-26 संपन्न

माछी समाज को एक सूत्र में बांधने के लिए सामाजिक महासम्मेलन अत्यंत जरूरी है: विशाल टंडेल

■ श्री पश्चिम भारत माछी समाज महासंघ अध्यक्ष विशाल टंडेल की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 13 सितंबर। श्री पश्चिम भारत माछी समाज महासंघ की वार्षिक सामान्य सभा बीते 6 सितंबर 2026 को सुबह 10 बजे बिलीमोरा के पारसी समाज हॉल में श्री पश्चिम भारत माछी समाज महासंघ के अध्यक्ष विशाल टंडेल की अध्यक्षता में हुई। जिसमें लगभग 100 सदस्य मौजूद थे। कार्यक्रम के दौरान सबसे पहले पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय चंपकभाई टंडेल और स्वर्गीय राजेश्रीबेन और समाज और देश के शहीदों को मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। महासंघ के अध्यक्ष विशाल टंडेल और पदाधिकारियों ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ कराया। स्वागत संबोधन महासंघ के जनरल सेक्रेटरी ईश्वर एम. टंडेल ने दिया। मीटिंग में प्रार्थना गीत हरीश टंडेल बिलीमोरा ने प्रस्तुत किया। मीटिंग के मिनट्स एवं लेखा-जोखा महासंघ के जनरल सेक्रेटरी गिरीश टंडेल ने प्रस्तुत किया। इस वार्षिक सामान्य सभा में महासंघ के जनरल सेक्रेटरी के पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने वाले ठाकोर पटेल की सेवा की तारीफ की गई और उनकी अच्छी सेहत और लंबी उम्र की कामना की गई। महासंघ के कई जाने-माने लोगों ने समाज की एकता के बारे में बात की। गैर-कानूनी मछली पकड़ने से समाज को होने वाले नुकसान के बारे में सरकार के समक्ष मांग, मछुआरों की जमीन उनके नाम करने बाबत, मछुआरों को समुद्री किसान का दर्जा देने बाबत, इंडस्ट्री द्वारा गंदा पानी समुद्र में छोड़ने और दक्षिण गुजरात के वलसाड, नवसारी और सूरत में हाल ही में हुई भारी बारिश और बाढ़ से नावों, झींगा तालाबों और घरों को हुए नुकसान के लिए सरकारी मदद के सरकार के बड़े मंत्री और अधिकारियों के सामने मजबूती से मांग करने जैसे मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई। महासंघ की इस मीटिंग में गत जिला पंचायत के चुनाव में माछी समाज की राजनीतिक पार्टियों द्वारा की गई अनदेखी और प्रतिनिधित्व का मौका नहीं दिये जाने पर चिंता जताई गई और यह तय किया गया कि आने वाले गुजरात असेंबली इलेक्शन 2027 में वलसाड, नवसारी और सूरत जिलों के कोस्टल इलाकों से 3 से 4 सीटों पर माछीमार समाज को प्रतिनिधित्व करने का मौका दिया जाये ऐसी मांग की जाएगी। महासंघ की इस वार्षिक सामान्य सभा में महासंघ के उपाध्यक्ष नारण टंडेल, भरत टंडेल, जे. के. टंडेल, श्री माछी समाज प्रगति मंडल के महामंत्री सागर टंडेल, कुंदन टंडेल और दूसरे मेंबर्स ने समाज की एकता और अखंडता के लिए अपने विचार व्यक्त किए। इस सभा में महासंघ के महामंत्री मथुर टंडेल, उपाध्यक्षों मुकेश भाठेला, विपुलाबेन मिस्त्री, चंद्रवदन टंडेल, विजय टंडेल, उपेंद्र टंडेल, अमृत टंडेल, दलपत टंडेल, जगदीश टंडेल, हरीश टंडेल और अन्य महानुभावों मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन कडैया माछी समाज के प्रमुख राजेश टंडेल ने किया। कार्यक्रम के अंत में महासंघ के महामंत्री आई. एम. टंडेल ने राष्ट्रगीत गाकर मीटिंग का समापन किया।

टीबी मुक्त भारत अभियान अंतर्गत दमण की पॉलिकैब इंडिया लिमिटेड कंपनी को मिला सम्मान

■ टीबी मुक्त भारत अभियान में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के केंद्रीय प्रभारी अधिकारी जैघम अली खान ने कंपनी के प्रेसिडेंट रमेश कुंदनानी को प्रशस्ति पत्र/ सर्टिफिकेट देकर किया सम्मानित

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 13 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत पॉलिकैब इंडिया लिमिटेड कंपनी ने सराहनीय कार्य करते हुए निक्षय मित्र के रूप में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई है। इस उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के केंद्रीय प्रभारी अधिकारी जैघम अली खान द्वारा कंपनी के प्रेसिडेंट रमेश कुंदनानी को प्रशस्ति पत्र/ सर्टिफिकेट प्रदान किया गया है। इस अवसर पर पॉलिकैब कंपनी के प्रेसिडेंट रमेश कुंदनानी ने कहा कि टीबी को जड़ से खत्म करने के लिए जन-जागरूकता बहुत जरूरी है और हम सभी को मिलकर इस अभियान में सहयोग करना चाहिए।

संक्षिप्त डायरी

बिहार के 1.04 करोड़ लोगों को मिलेगा पीएम आवास, इन लोगों का कट सकता है नाम, जानिए क्यों नहीं मिलेगा लाभ

पटना (एजेंसी) बिहार में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत बड़ी प्रक्रिया शुरू हो गई है. 1 करोड़ से अधिक लोगों की सूची तैयार है, लेकिन 40% लोगों के नाम कटने की संभावना है. अपात्रता के कड़े मापदंडों और अनुमोदन प्रक्रिया को समझें. बिहार में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत घर पाने वाले संभावित लाभुकों की प्रक्रिया आगे बढ़ गयी है. राज्य के 1 करोड़ 4 लाख 90 हजार 743 लाभुकों को योजना का लाभ देने के लिए आवास सॉफ्टवेयर के जरिए प्रारूप सूची तैयार की गयी है. 11 सितंबर को 'डिलीशन मॉड्यूल' का काम पूरा कर सूची जिला लॉगिन में भेज दी गयी है. जबकि 40 फीसदी लाभुकों के नाम कटने के भी आसार हैं. 30 सितंबर तक ग्रामसभा से सूची का अनुमोदन तैयार प्रारूप सूची को अब संबंधित ग्रामसभा के सामने रखा जायेगा. अधिकतम 20 दिनों के भीतर यानी 30 सितंबर तक ग्रामसभा से सूची का अनुमोदन कर उसे प्रखंड कार्यालय को वापस भेजना अनिवार्य होगा. इसके लिए 27 सितंबर को पंचायत विकास दिवस के अवसर पर विशेष ग्रामसभा आयोजित कर सूची के अनुमोदन की तैयारी है. समय पर ग्रामसभा नहीं हुई तो सूची स्वतः अनुमोदित निर्धारित समय-सीमा में यदि किसी पंचायत में ग्रामसभा का आयोजन नहीं हो पाता है, तो संबंधित सूची स्वतः अनुमोदित मानी जायेगी. साथ ही समय पर ग्रामसभा नहीं कराने वाले संबंधित पंचायत सचिव के खिलाफ पंचायती राज अधिनियम के तहत कार्रवाई की जायेगी. 31 अक्टूबर तक अंतिम प्राथमिकता सूची पर मुहर ग्रामसभा से अनुमोदित सूची के बाद अपीलीय समिति शिकायतों और आपत्तियों की जांच करेगी. इसके बाद 31 अक्टूबर तक अंतिम प्राथमिकता सूची का अनुमोदन किया जायेगा. ग्रामीण विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव एचआर श्रीनिवास ने इस संबंध में राज्य के सभी जिलाधिकारियों और उपविकास आयुक्तों को पत्र भेजा है. 1.04 करोड़ में करीब 40 फीसदी नाम हटने की संभावना ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों के अनुसार, 20 लाख 44 हजार 427 ग्रामीणों ने खुद को आवास पाने के योग्य बताते हुए स्वयं दावा किया है. वहीं 84 लाख 46 हजार 316 लाभुकों ने विभागीय सर्वेक्षणकताओं के माध्यम से आवास योजना के लिए अपनी पात्रता बतायी है. अधिकारियों के अनुसार जांच और पात्रता की शर्तों के आधार पर इनमें से करीब 40 फीसदी नाम हटने की संभावना है. पक्का मकान और दो से अधिक कमरे होने पर लाभ नहीं अपात्र लाभुकों की पहचान के लिए कई कड़े मापदंड लागू किये गये हैं. जिन परिवारों के पास पक्की छत या पक्की दीवारों वाला मकान है अथवा दो से अधिक कमरों का मकान है, उन्हें योजना का लाभ नहीं मिलेगा. इसी तरह मोटर चालित तीन या चार पहिया वाहन और मशीनी कृषि उपकरण रखने वाले परिवार भी पात्र नहीं होंगे. 15 हजार रुपये से अधिक मासिक आय वालों को भी बाहर किया जायेगा योजना के तहत ऐसे परिवार भी पात्र नहीं होंगे, जिनकी मासिक आय 15 हजार रुपये से अधिक है. परिवार में कोई सदस्य आयकर या व्यवसाय कर देता है तो भी लाभ नहीं मिलेगा. इसके अलावा 50 हजार रुपये या उससे अधिक की सीमा वाला किसान क्रेडिट कार्ड रखने वाले परिवार और सरकारी नौकरी वाले परिवारों को भी सूची से बाहर रखा जायेगा. जमीन की सीमा भी तय की गयी पात्रता की जांच में जमीन को भी आधार बनाया गया है. जिन परिवारों के पास 2.5 एकड़ से अधिक सिंचित भूमि या पांच एकड़ से अधिक असिंचित भूमि है, उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की सूची में शामिल नहीं किया जायेगा. इन परिवारों को प्राथमिकता देने की तैयारी प्रतीक्षा सूची में कमजोर और वंचित परिवारों को प्राथमिकता दी जायेगी. इसमें दिव्यांग सदस्य वाले परिवार, महिला प्रधान परिवार जिनमें कोई वयस्क पुरुष नहीं है, आश्रयहीन परिवार, भीख मांगकर जीवनयापन करने वाले, हाथ से मैला ढोने वाले, बंधुआ मजदूर, आदिम जनजातीय समूह और गंभीर बीमारी से प्रभावित परिवार शामिल हैं. हर जिले में बनेगी तीन सदस्यीय अपीलीय समिति लाभुकों की शिकायतों और संभावित धांधली की रोकथाम के लिए हर जिले में तीन सदस्यीय जिला स्तरीय अपीलीय समिति गठित की जायेगी. 15 सितंबर तक समिति के गठन का लक्ष्य रखा गया है.

बिहार में चीनी मिल लगाने वालों को 1 रुपये में मिलेगी 40 एकड़ जमीन, सरकार देगी 70 करोड़ तक की सब्सिडी

पटना (एजेंसी) बिहार में चीनी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने नई नीति लागू की है. इसके तहत चीनी मिल लगाने वाले निवेशकों को एक रुपये की टोकन राशि पर 40 एकड़ तक जमीन मिलेगी. साथ ही नई मिल लगाने पर 70 करोड़ रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा. बिहार में चीनी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार ने महत्वपूर्ण फैसला लिया है. अब राज्य में चीनी मिल लगाने के इच्छुक निवेशकों को एक रुपये की टोकन राशि पर करीब 40 एक-ड़ तक जमीन उपलब्ध कराई जाएगी. इसके साथ ही नई चीनी मिल लगाने पर सरकार 70 करोड़ रुपये तक का अनुदान भी देगी. नई नीति से निवेशकों के लिए खुली राह राज्य सरकार ने इसके लिए बिहार गन्ना उद्योग निवेश प्रोत्साहन नीति-2026 लागू की है. इसका उद्देश्य राज्य में गन्ना आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना और नई चीनी मिलों की स्थापना को आसान बनाना है. मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के आदेश के बाद यह नीति लागू की गई है. सरकार का मानना है कि इससे बिहार में गन्ना उद्योग के विस्तार को गति मिलेगी. साथ ही निवेशकों को मिल लगाने के लिए जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी जोर रहेगा. पांच साल में 25 नई चीनी मिलें लगाने का लक्ष्य राज्य सरकार ने अगले पांच वर्षों में एक करोड़ युवाओं को रोजगार देने का लक्ष्य रखा है. इसी कड़ी में बंद पड़ी चीनी मिलों को फिर से शुरू करने की योजना है. इसके अलावा राज्य में 25 नई चीनी मिलें लगाने का भी लक्ष्य तय किया गया है. इस लक्ष्य को तेजी से पूरा करने के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय कमेटी का गठन किया गया है. कमेटी नई चीनी मिलों की स्थापना से जुड़े मामलों की निगरानी करेगी और प्रक्रिया में तेजी लाने का काम करेगी. नई चीनी मिल लगाने पर 70 करोड़ रुपये तक का अनुदान नई नीति के तहत न्यूनतम 3500 टीडीसी क्षमता वाली चीनी मिल लगाने पर निवेशक को 70 करोड़ रुपये का अनुदान मिलेगा. यह राशि पांच समान वार्षिक किस्तों में दी जाएगी. 3500 टीडीसी से अधिक क्षमता वाली मिलों के लिए भी अतिरिक्त प्रोत्साहन का प्रावधान किया गया है. हर 100 टीडीसी अतिरिक्त क्षमता बढ़ाने पर सरकार दो करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रोत्साहन देगी. बिहार की ताजा खबरों के लिए यहां क्लिक करें पुरानी मिलों की क्षमता बढ़ाने पर भी मिलेगा लाभ सरकार ने पहले से चल रही चीनी मिलों के विस्तार को भी नीति में शामिल किया है. कार्यरत चीनी मिलों की क्षमता में 1000 टीडीसी तक की वृद्धि करने पर 15 करोड़ रुपये का प्रोत्साहन दिया जाएगा. इसके बाद प्रत्येक 100 टीडीसी क्षमता विस्तार पर 1.5 करोड़ रुपये का अतिरिक्त प्रोत्साहन मिलेगा. इससे मौजूदा चीनी मिलों को भी अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी. रोजगार और गन्ना उद्योग को बढ़ावा देने की कोशिश सरकार की नई नीति का मकसद केवल चीनी मिलों की संख्या बढ़ाना नहीं है. इसके जरिए गन्ना किसानों को बाजार उपलब्ध कराने, गन्ना आधारित उद्योगों का विस्तार करने और रोजगार के अवसर बढ़ाने की कोशिश की जा रही है. सरकार को उम्मीद है कि नई चीनी मिलों और बंद मिलों के दोबारा शुरू होने से राज्य में निवेश बढ़ेगा. इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे.

बिहार के शहरों में भी होगा जमीन सर्वे, हर मकान-फ्लैट का बनेगा अलग रिकॉर्ड, जानें मालिकों को क्या होगा फायदा

पटना (एजेंसी) बिहार में ग्रामीण जमीन सर्वे के बाद अब शहरों में भी विशेष भूमि सर्वे होगा. राज्य के 264 नगर निकायों में होने वाले इस सर्वे में फ्लैट मालिकों का जमीन में समानुपातिक हिस्सा भी दर्ज किया जाएगा. ड्रोन और जीपीएस से जमीन का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार होगा. बिहार में ग्रामीण इलाकों का जमीन सर्वे पूरा होने के बाद अब शहरी क्षेत्रों में भी विशेष भूमि सर्वेक्षण शुरू किया जाएगा. राज्य के सभी 264 नगर निकाय इसके दायरे में आएंगे. इस सर्वे की सबसे खास बात फ्लैट और बहुमंजिली इमारतों में रहने वाले लोगों से जुड़ी है. फ्लैट मालिकों के नाम जमीन के साथ उनके फ्लैट का वैधानिक और समानुपातिक मालिकाना हक भी दर्ज किया जाएगा. सरकार की ओर से इस संबंध में आधिकारिक पत्र जारी कर दिया गया है. सर्वे में राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के साथ नगर निकाय के अधिकारी और कर्मचारी भी शामिल होंगे. 264 नगर निकायों में शुरू होगा सर्वे बंदोबस्त पदाधिकारियों के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों का सर्वे पूरा होते ही शहरी क्षेत्रों में यह अभियान शुरू होगा. राज्य के सभी 264 नगर निकायों को इसमें शामिल किया जाएगा. यह सर्वे पुराने रिकॉर्ड को अपडेट करने के साथ जमीन के मालिकाना हक को स्पष्ट करने के लिए किया जा रहा है. सर्वे का काम आधुनिक तकनीक से होगा. इसमें ड्रोन और जीपीएस की मदद ली जाएगी. फ्लैट खरीदने वालों को क्या मिलेगा? शहरी जमीन सर्वे में सिर्फ इमारत के नीचे की जमीन का रिकॉर्ड तैयार नहीं होगा. बहुमंजिली इमारतों में मौजूद अलग-अलग फ्लैटों का मालिकाना हक भी दर्ज किया जाएगा. यानी जिस व्यक्ति के नाम फ्लैट है, उसके फ्लैट के साथ जमीन में उसका समानुपातिक स्वामित्व भी रिकॉर्ड में दर्ज होगा. इसके अलावा वैधानिक दखल की जानकारी भी दर्ज की जाएगी. इससे भविष्य में फ्लैट और जमीन को लेकर होने वाले विवादों को कम करने में मदद मिलेगी. ड्रोन और जीपीएस से होगी जमीन की मैपिंग शहरी भूमि सर्वे में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा. ड्रोन और जीपीएस के जरिए जमीन की मैपिंग होगी. सर्वे पूरा होने के बाद रैयतों को लैंड पार्सल मैप उपलब्ध कराया जाएगा. इसके बाद जमीन के रिकॉर्ड को लेकर किसी तरह की आपत्ति होने पर संबंधित व्यक्ति प्रपत्र-8 के जरिए आपत्ति दर्ज करा सकेगा. इससे रिकॉर्ड में सुधार की प्रक्रिया भी तय तरीके से आगे बढ़ेगी. पटना में क्यों अहम है नया जमीन सर्वे? पटना समेत कई शहरी क्षेत्रों में पुराना सर्वे रिकॉर्ड आज भी बड़ी समस्या है. पटना में 1959-65 का रिविजनल सर्वे पूरा नहीं हो सका था. ऐसे में करीब एक सदी पुराने 1920 के कैडस्ट्रल खतियान को ही अब तक कानूनी आधार माना जाता रहा है. नए शहरी भूमि सर्वे से जमीन का नया और डिजिटल रिकॉर्ड तैयार होगा. इससे पुराने रिकॉर्ड पर निर्भरता कम होगी. जमीन की सीमा और मालिकाना हक को भी नए सिरे से दर्ज किया जाएगा. ग्रामीण और शहरी सर्वे में क्या होगा अंतर? ग्रामीण और शहरी भूमि सर्वे की प्रक्रिया पूरी तरह एक जैसी नहीं होगी. ग्रामीण क्षेत्रों में सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी, कानूनगो और अमीन की टीम सर्वे करती है. शहरी क्षेत्रों में राजस्व विभाग के साथ नगर निकाय के अधिकारी और कर्मचारी भी सर्वे टीम का हिस्सा होंगे. शहरी क्षेत्रों में बहुमंजिली इमारतों और फ्लैटों को देखते हुए अलग व्यवस्था रखी गई है. यहां जमीन के साथ फ्लैट का समानुपातिक स्वामित्व भी रिकॉर्ड में दर्ज होगा. बिहार की ताजा खबरों के लिए यहां क्लिक करें शहरों के लिए होंगे अलग प्रपत्र शहरी भूमि सर्वे में सामान्य प्रपत्रों के बजाय विशेष प्रपत्रों का इस्तेमाल होगा. इनमें प्रपत्र 1'क', 2'क', 3'क', 7'क', 12'क' और 20'क' शामिल हैं. अंतिम रूप से प्रकाशित खतियान की चार प्रतियां तैयार की जाएंगी. इनमें एक प्रति अंचल कार्यालय और एक संबंधित नगरपालिका कार्यालय को दी जाएगी. शहरों के लिए अलग नगरपालिका लगान दर तालिका भी तैयार होगी. इसके लिए प्रपत्र-18 ग का इस्तेमाल किया जाएगा. वार्ड कार्यालय और वेबसाइट पर मिलेगी जानकारी

भरत तिवारी की मौत के बाद पहली बार घर पहुंचे डीएम-एसपी, आधे घंटे की बातचीत में परिवार ने रखीं ये मांगें

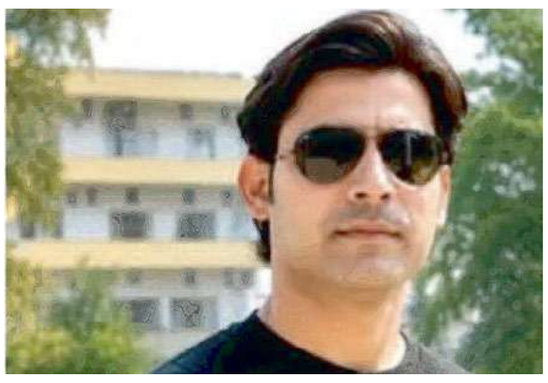

पटना (एजेंसी) : पुलिस एनकाउंटर में भरत तिवारी की मौत के बाद उनके पैतृक गांव बिलौटी में प्रशासनिक हलचल तेज हो गई है. भोजपुर के डीएम और एसपी ने तिवारी के परिवार से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं, जिसमें न्याय, स्मारक निर्माण और विस्थापितों की मदद की मांग प्रमुख है. 17 जून को पुलिस एनकाउंटर में भरत तिवारी की मौत के बाद चर्चा में आए बिलौटी गांव में शनिवार को प्रशासनिक हलचल देखने को मिली. भोजपुर के डीएम मनीष कुमार मीना और एसपी अभिषेक दीक्षित पहली बार भरत तिवारी के पैतृक घर पहुंचे. दोनों अधिकारियों ने करीब आधे घंटे तक भरत के माता-पिता और अन्य परिजनों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं. परिवार ने न्याय और स्मारक निर्माण की मांग के दौरान भरत तिवारी के परिजनों ने उनकी मौत के मामले में न्याय की मांग दोहराई. परिवार ने भरत की याद में स्मारक निर्माण कराने के साथ आवास परिसर और आसपास मिट्टी भराई कराने की मांग भी प्रशासन के सामने रखी. गंगा कटान से विस्थापित परिवारों का मुद्दा भी उठा परिजनों ने गंगा कटान से प्रभावित बिलौटी के विस्थापित परिवारों की समस्याओं को भी अधिकारियों के सामने रखा. परिवार के अनुसार, कई बाढ़पीड़ित अब तक सरकारी सहायता की सूची में शामिल नहीं हो पाए हैं. विस्थापित इलाके में घर, सड़क और अन्य मूलभूत सुविधाओं की कमी का मुद्दा भी उठाया गया. पानी कम होने के बाद सड़क और मिट्टी भराई का भरोसा परिवार के मुताबिक, डीएम मनीष कुमार मीना ने भरोसा दिया कि बाढ़ का पानी कम होने और क्षेत्र के सूखने के बाद जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में काम किया जाएगा. विस्थापित इलाके में मिट्टी भराई कर पक्की सड़क बनाने और घरों के लिए सहायता उपलब्ध कराने की बात कही गई. डीएम ने संबंधित एसडीएम को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए. भरत तिवारी के घर पर पुलिस गार्ड तैनात परिजनों की सुरक्षा संबंधी चिंताओं को देखते हुए भरत तिवारी के घर पर पुलिस गार्ड तैनात किया गया है. अधिकारियों ने परिवार को सरकार की ओर से घोषित प्रावधानों के तहत अनुकंपा पर नौकरी और अन्य सरकारी सहायता की प्रक्रिया को प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाने का भरोसा दिया. सोशल मीडिया पर परेशान करने की शिकायत परिवार ने सोशल मीडिया पर कुछ लोगों द्वारा उन्हें बदनाम करने और परेशान किए जाने की शिकायत भी डीएम-एसपी के सामने रखी. शिकायत पर शाहपुर थानाध्यक्ष को तत्काल प्राथमिकी दर्ज करने और संबंधित लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया. सीओ को कागजी प्रक्रियाएं जल्द पूरी करने का निर्देश मौके पर डीएम ने सीओ को बुलाकर परिवार से जुड़ी कागजी प्रक्रियाओं को प्राथमिकता के आधार पर जल्द पूरा करने का निर्देश दिया. स्मारक निर्माण, परिसर में मिट्टी भराई और सरकारी सहायता से वंचित बाढ़पीड़ितों के नाम सूची में जोड़ने की मांग पर भी प्रशासन की ओर से सकारात्मक पहल का भरोसा दिया गया. भरत तिवारी की मौत के बाद गठित हुआ न्यायिक जांच आयोग भरत तिवारी की 17 जून को पुलिस एनकाउंटर में मौत के बाद मामला काफी चर्चित हुआ था. घटना की जांच के लिए न्यायिक जांच आयोग का गठन किया गया है.

बिहार में 45 दिन चलेगा विशेष अभियान, 5 लाख जमाबंदी में गड़बड़ी, कहीं खाता तो कहीं खेसरा-नाम गलत

पटना (एजेंसी) बिहार में जमीन के रिकॉर्ड से जुड़ी गड़बड़ियों को दूर करने के लिए सरकार 45 दिन का विशेष अभियान चलाने जा रही है. करीब 5 लाख जमाबंदी में खाता, खेसरा, प्लॉट या रैयत का नाम गलत दर्ज है. अब इन रिकॉर्ड को दुरुस्त करने की प्रक्रिया तेज होगी. बिहार में जमीन के रिकॉर्ड से जुड़ी बड़ी संख्या में गड़बड़ियां अब भी लोगों के लिए परेशानी बनी हुई हैं. करीब पांच लाख जमाबंदी में खाता, खेसरा, प्लॉट या रैयत का नाम गलत दर्ज है. इन गलतियों के कारण जमीन मालिक अपनी ही जमीन से जुड़े कई काम नहीं करा पा रहे हैं. राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग ने अब इन मामलों के समाधान के लिए 45 दिन का विशेष अभियान चलाने का फैसला किया है. इसका मकसद लंबित जमाबंदियों में दर्ज गलतियों को दूर करना है. कहीं खाता गलत तो कहीं रैयत का नाम दर्ज जमाबंदी में अलग-अलग तरह की गड़बड़ियां सामने आई हैं. कई मामलों में खाता नंबर गलत दर्ज है. कुछ में खेसरा या प्लॉट की जानकारी गलत है. वहीं कई जमाबंदियों में रैयत का नाम ही गलत दर्ज कर दिया गया है. गलतियों के चलते बड़ी संख्या में जमाबंदियों को लॉक भी कर दिया गया है. ऐसी स्थिति में जमीन मालिक राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के पोर्टल पर अपनी जमीन का सही विवरण नहीं देख पा रहे हैं. बिहार की ताजा खबरों के लिए यहां क्लिक करें कई जमाबंदी दो-तीन साल से लॉक सूत्रों के अनुसार, कई अंचलों में रजिस्टर-2 के पन्ने फटे या गायब होने की वजह से भी जमीन का सही विवरण नहीं मिल सका. कुछ मामलों में रजिस्टर-2 मेंजमाबंदी को गलत या अवैध तरीके से बदलकर नई जमाबंदी तैयार कर दी गई. इसके आधार पर दाखिल-खारिज भी कर दिया गया और मालगुजारी की रसीद तक काट दी गई. बाद में ऐसे मामलों में अपीलीय प्राधिकार न्यायालयों ने न्यायोचित फैसला और आदेश भी दिया. इसके बावजूद जमाबंदी में सुधार नहीं हो सका. ऐसी कई जमाबंदियां अब भी दो-तीन साल या उससे ज्यादा समय से लॉक हैं. इससे जमीन मालिकों की परेशानी लगातार बनी हुई है. रजिस्टर-2 के मामलों में जमाबंदी पुनर्गठन राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग ने रजिस्टर-2 के फटे या गायब पन्नों जैसी समस्याओं के समाधान के लिए अंचलों को जमाबंदी पुनर्गठन का निर्देश दिया ह

बिहार के 1.04 करोड़ लोगों को मिलेगा पीएम आवास, इन लोगों का कट सकता है नाम, जानिए क्यों नहीं मिलेगा लाभ

पटना (एजेंसी) बिहार में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत बड़ी प्रक्रिया शुरू हो गई है. 1 करोड़ से अधिक लोगों की सूची तैयार है, लेकिन 40% लोगों के नाम कटने की संभावना है. अपात्रता के कड़े मापदंडों और अनुमोदन प्रक्रिया को समझें. बिहार में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत घर पाने वाले संभावित लाभुकों की प्रक्रिया आगे बढ़ गयी है. राज्य के 1 करोड़ 4 लाख 90 हजार 743 लाभुकों को योजना का लाभ देने के लिए आवास सॉफ्टवेयर के जरिए प्रारूप सूची तैयार की गयी है. 11 सितंबर को 'डिलीशन मॉड्यूल' का काम पूरा कर सूची जिला लॉगिन में भेज दी गयी है. जबकि 40 फीसदी लाभुकों के नाम कटने के भी आसार हैं. 30 सितंबर तक ग्रामसभा से सूची का अनुमोदन तैयार प्रारूप सूची को अब संबंधित ग्रामसभा के सामने रखा जायेगा. अधिकतम 20 दिनों के भीतर यानी 30 सितंबर तक ग्रामसभा से सूची का अनुमोदन कर उसे प्रखंड कार्यालय को वापस भेजना अनिवार्य होगा. इसके लिए 27 सितंबर को पंचायत विकास दिवस के अवसर पर विशेष ग्रामसभा आयोजित कर सूची के अनुमोदन की तैयारी है. समय पर ग्रामसभा नहीं हुई तो सूची स्वतः अनुमोदित निर्धारित समय-सीमा में यदि किसी पंचायत में ग्रामसभा का आयोजन नहीं हो पाता है, तो संबंधित सूची स्वतः अनुमोदित मानी जायेगी. साथ ही समय पर ग्रामसभा नहीं कराने वाले संबंधित पंचायत सचिव के खिलाफ पंचायती राज अधिनियम के तहत कार्रवाई की जायेगी. 31 अक्टूबर तक अंतिम प्राथमिकता सूची पर मुहर ग्रामसभा से अनुमोदित सूची के बाद अपीलीय समिति शिकायतों और आपत्तियों की जांच करेगी. इसके बाद 31 अक्टूबर तक अंतिम प्राथमिकता सूची का अनुमोदन किया जायेगा. ग्रामीण विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव एचआर श्रीनिवास ने इस संबंध में राज्य के सभी जिलाधिकारियों और उपविकास आयुक्तों को पत्र भे है. 1.04 करोड़ में करीब 40 फीसदी नाम हटने की संभावना ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों के अनुसार, 20 लाख 44 हजार 427 ग्रामीणों ने खुद को आवास पाने के योग्य बताते हुए स्वयं दावा किया है. वहीं 84 लाख 46 हजार 316 लाभुकों ने विभागीय सर्वेक्षणकताओं के माध्यम से आवास योजना के लिए अपनी पात्रता बतायी है

सासाराम में दोहरे हत्याकांड की जांच तेज, आखिर हत्यारों को कैसे पता था छत पर सोते हैं मणिभूषण और ननकी

पटना (एजेंसी) :सासाराम के बेदा में मणिभूषण और ननकी की हत्या के बाद पुलिस जांच जारी है। हत्यारों को छत पर सोने की जानकारी कैसे मिली, यह सवाल अब भी अनसुलझा बना हुआ है। सासाराम ग्रामीण. सासाराम मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बेदा में मणिभूषण कुमार और ननकी देवी की गत 6 सितंबर को गोली मारकर हत्या के मामले में पुलिस की जांच आगे बढ़ रही है. हालांकि, अब तक हत्यारों तक पहुंचने वाली अहम कड़ी हाथ नहीं लगी है. छत पर सोने की जानकारी हत्यारों तक कैसे पहुंची? इस दोहरे हत्याकांड में सबसे बड़ा सवाल यह बना हुआ है कि अपराधियों को आखिर कैसे पता चला कि मणिभूषण और ननकी रात में घर की छत पर सोते हैं. बताया जाता है कि दोनों छत पर सो रहे थे. इसी दौरान अपराधी वहां पहुंचे और गोली मारकर दोनों की हत्या कर दी.वारदात के बाद कमरों को बाहर से कर दिया गया था बंद वारदात के बाद घर में मौजूद अन्य लोगों के कमरों को बाहर से बंद कर दिया गया था. इससे पुलिस इस बिंदु पर भी जांच कर रही है कि अपराधियों को घर की बनावट, परिवार के सदस्यों की मौजूदगी और रात में दोनों के छत पर सोने की जानकारी पहले से थी या नहीं. पहले रेकी हुई थी या किसी ने दी थी जानकारी? जांच का अहम सवाल यह भी है कि क्या अपराधियों ने पहले रेकी की थी या किसी व्यक्ति से उन्हें घर की गतिविधियों की जानकारी मिली थी. हालांकि, अभी तक पुलिस ने किसी व्यक्ति को मुखबिर अथवा साजिश में शामिल होने की पुष्टि नहीं की है. ऐसे में किसी परिचित या स्थानीय व्यक्ति पर संदेह जताना जांच पूरी होने से पहले उचित नहीं होगा. मृतकों के संपर्क में रहने वालों से जुटायी जा रही जानकारी पुलिस मृतकों के संपर्क में रहने वाले लोगों, घटना से पहले की गतिविधियों और आसपास की आवाजाही की जानकारी जुटा रही है. घटनास्थल से मिले साक्ष्यों के आधार पर अपराधियों के आने और भागने के रास्ते की भी पड़ताल की जा रही है. अचानक वारदात हुई या पहले से तैयार थी योजना? पुलिस यह जानने का प्रयास कर रही है

पीएम मोदी ने ब्रिक्स में विभिन्न वर्गों की भागीदारी बढ़ाने का किया आह्वान

■ समिट के दूसरे दिन बोले- सहयोग सिर्फ सरकारों तक सीमित न रहे, किसान, उद्यमी, रिसर्चर, महिलाएं और युवा भी सक्रिय रूप से जुड़ें

नई दिल्ली,(ईएमएस)। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दूसरे दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समूह में सरकारों के साथ समाज के विभिन्न वर्गों की भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत ने ब्रिक्स के मंच के जरिए दोस्ती, साझेदारी और सहयोग की भावना को आगे बढ़ाया है। अब यह सुनिश्चित करने की कोशिश होनी चाहिए कि ब्रिक्स का सहयोग केवल सरकारों तक सीमित न रहे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि समूह के कामकाज में उद्यमियों, किसानों, शोधकर्ताओं, महिलाओं, युवाओं और आम नागरिकों को भी सक्रिय रूप से शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि व्यापक जनभागीदारी से ब्रिक्स सहयोग को और मजबूत किया जा सकता है। इससे पहले शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल नेताओं, विभिन्न देशों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों के लिए विशेष डिनर का आयोजन किया था। हालांकि, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग इसमें शामिल नहीं हुए। मामले की जानकारी रखने वाले सूत्रों के मुताबिक, शी जिनपिंग समिट में हिस्सा लेने के बाद आराम करने के लिए होटल लौट गए थे। उनके डिनर में शामिल नहीं होने की वजह की आधिकारिक तौर पर पुष्टि नहीं हुई है। अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद भी डिनर में शामिल नहीं हुए। वह दिन में ब्रिक्स समिट में हिस्सा लेने के बाद अपने देश लौट गए थे। गौरतलब है कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग शनिवार दोपहर दिल्ली पहुंचे थे। उन्होंने ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ द्विपक्षीय बैठक भी की। करीब सात साल बाद हुई उनकी भारत यात्रा को दोनों देशों के संबंधों के लिहाज से महत्वपूर्ण माना गया। ब्रिक्स सम्मेलन के दूसरे दिन शी जिनपिंग ने प्रधानमंत्री मोदी का संबोधन सुना और अन्य नेताओं के साथ फैमिली फोटो में भी शामिल हुए। इसके बाद वह ब्रिक्स समिट के कार्यक्रम पूरे कर चीन के लिए रवाना हो गए।

आतंकवाद से लेकर वैश्विक सुधार तक ब्रिक्स देशों का साझा रुख ब्रिक्स घोषणापत्र में भारत की कूटनीतिक जीत

नई दिल्ली,(ईएमएस)। यहां आयोजित 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में नई दिल्ली घोषणापत्र जारी किया गया, जिसने आतंकवाद, वैश्विक शासन सुधार और मध्य-पूर्व संकट जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर सदस्य देशों का साझा रुख प्रस्तुत किया। इस घोषणापत्र को भारत की कूटनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है, खासकर तब जब विभिन्न वैश्विक चुनौतियों पर साझा सहमति बनाना कठिन माना जा रहा था।घोषणापत्र में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में अप्रैल 2025 को हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की गई, जिसमें 26 नागरिकों की मौत हुई थी। ब्रिक्स ने देश-समर्थित सीमा पार आतंकवाद, इसकी फंडिंग और आर्तकियों के सुरक्षित ठिकानों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर जोर दिया।

चीन और रूस जैसे देशों की मौजूदगी में किसी विशिष्ट आतंकी घटना का नाम शामिल करना और सीमा पार आतंकवाद पर सीधा रुख अपनाना भारत के लिए एक बड़ी कूटनीतिक जीत मानी जा रही है, जो आतंकवाद के मुद्दे पर दोहरे मानदंडों को अस्वीकार करता है।संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में सुधार की मांग को दोहराते हुए ब्रिक्स देशों ने इसे अधिक लोकतांत्रिक, प्रतिनिधि और प्रभावी बनाने पर जोर दिया। चीन और रूस ने विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र में भारत और ब्राजील की बड़ी भूमिका और आकांक्षाओं के प्रति अपने समर्थन को दोहराया। चीन का पहले यूएनएससी में भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध करना और अब इस पर सहमति जताना, भारत की दीर्घकालिक कोशिशों को रणनीतिक बल प्रदान करता है। गाजा संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए घोषणापत्र में बिना बाधा मानवीय सहायता पहुंचाने और स्थायी युद्धविराम की मांग की गई। घोषणापत्र में एकतरफा टैरिफ, व्यापार बाधाओं और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की मंजूरी के बिना लगाए जाने वाले आर्थिक प्रतिबंधों का विरोध किया गया। यूरोपीय संघ के कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म जैसे ग्रीन-टैक्स उपायों को संरक्षणवाद करार दिया गया। इसके अतिरिक्त, ब्रिक्स ने विश्व व्यापार संगठन में तत्काल सुधार और उसके ठप पड़े विवाद निपटान तंत्र की बहाली की मांग की, जो नियम-आधारित वैश्विक व्यापार व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। सदस्य देशों ने आपस में स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने और भुगतान प्रणालियों के बीच इंटर-कनेक्शन विकसित करने पर सहमति जताई, जिससे अमेरिकी डॉलर पर वैश्विक निर्भरता कम होगी। भारत के गुजरात स्थित गिफ्ट सिटी आईएफएससी में ब्रिक्स रिस्क लैब स्थापित करने के प्रस्ताव का स्वागत किया गया, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) शासन पर भारत की पहल एआई इंपैक्ट समिट की सराहना की गई, जो भारत को वैश्विक मंच पर एक मजबूत स्थिति में रखता है। घोषणापत्र में शांतिपूर्ण परमाणु ठिकानों पर हमलों को अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताया गया और ऊर्जा सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया गया।

दीव के चक्रतीर्थ बीच पर चट्टान में फंसी बोट से खलासियों और माल-सामान को मुश्किल से निकाला गया बाहर

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 13 सितंबर।

दीव के चक्रतीर्थ बीच पर फंसी नाव से नाविकों और माल-सामान को महा मुसीबत से बाहर निकाला गया। दीव के चक्रतीर्थ बीच के पास कल दोपहर प्रभु शिवा (पंजीकरण संख्या आईएनडी-डीडी 02-एमएम 1564) नामक एक मछली पकड़ने वाली नाव मछली पकड़ते समय अचानक किनारे पर आ गई और एक चट्टान से टकरा गई। नाव के मालिक उमेश राजा चावड़ा निवासी वाणियावाड़ी, साउदवाड़ी को नाव के फंसने से लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। नाव के फंसने की सूचना मिलते ही प्रशासन के अधिकारी और कर्मचारी मौके पर पहुंचे और नाव पर सवार मछुआरों को सुरक्षित निकालने के लिए बचाव अभियान चलाया गया। इस बीच समुद्र में पानी का बहाव कम होने और ज्वार बढ़ने के कारण मछुआरों और आवश्यक सामान को नाव से सुरक्षित उतारकर किनारे पर लाया गया। बचाव अभियान में मछुआरे परिवार के सभी सदस्यों ने पूरा सहयोग दिया और बड़ी कठिनाइयों के बावजूद मछुआरों और उनके सामान को सुरक्षित किनारे पर लाया गया। हालांकि प्रभु शिवा नाम की नाव अभी भी घटनास्थल पर फंसी हुई है, जिसके कारण नाव मालिक को लाखों रुपये का नुकसान उठाना पड़ा है।

ब्रिक्स में विशेषज्ञों ने कहा-भारत बना वैश्विक डिजिटल और एआई का केंद्र

नई दिल्ली,(ईएमएस)। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के पहले दिन विभिन्न देशों के विशेषज्ञों ने भारत की डिजिटल तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में बढ़ती वैश्विक भूमिका की जमकर सराहना की। विशेषज्ञों ने इस बात पर जोर दिया कि भारत तेजी से एक वैश्विक एआई केंद्र के रूप में उभर रहा है, जिसके चलते ब्रिक्स देशों के बीच तकनीकी साझेदारी, नवाचार और ज्ञान के आदान-प्रदान की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने भारत के विशिष्ट डिजिटल भुगतान मॉडल, विशेषकर यूपीआई, को भी विश्व के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बताया, जो समावेशी विकास और वित्तीय समावेशन का एक प्रतीक बन गया है। इस अवसर पर मिस्र के एआई विशेषज्ञ अहमद गमाल ने ब्रिक्स को उभरती अर्थव्यवस्थाओं के लिए तकनीकी सहयोग और नवाचार का एक साझा मंच बताया। उन्होंने भारत और मिस्र के बीच एआई क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की व्यापक संभावनाओं पर प्रकाश डाला, जिससे भविष्य में संयुक्त परियोजनाओं और ज्ञान साझा करने का मजबूत आधार तैयार हो सकता है। गमाल ने यह भी कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, विशेषकर एजेंटिक एआई का उभरता दौर, आने वाले वर्षों में रोजगार और काम करने के तरीकों में बड़े बदलाव लाएगा। उन्होंने सरकारों और उद्योगों को इस बदलती तकनीक को समझकर इसका जिम्मेदारी के साथ उपयोग करने की सलाह दी, ताकि विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाई जा सके और समाज को इसका अधिकतम लाभ मिल सके। उन्होंने ब्रिक्स सदस्य देशों को एक-दूसरे की विशेषज्ञता से सीखने और नवाचार को गति देने के लिए प्रोत्साहित किया। ब्रिक्स बिजनेस काउंसिल के प्रमुख आंद्रे मिखायलिशिन ने ब्रिक्स पे की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इसका मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों की राष्ट्रीय भुगतान प्रणालियों को आपस में जोड़ना है। इससे यात्रियों और कंपनियों को अलग-अलग देशों में भुगतान और लेनदेन करने में काफी सुविधा मिलेगी, जिससे ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार और वित्तीय संपर्क और मजबूत होंगे। ब्रिक्स पे इंडिया के प्रमुख डॉ. पवन जोश ने भारत और रूस के ऐतिहासिक एवं भरोसेमंद संबंधों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि रूस, भारत के मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में एक बड़ा सहयोगी बन सकता है। डॉ. जोश ने भारत के यूपीआई को स्थानीय जरूरतों के अनुरूप तकनीक विकसित करने की भारत की क्षमता का एक शानदार उदाहरण बताया, जो अब वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है और कई देशों के लिए प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वसुधैव कुटुम्बकम के दृष्टिकोण को ब्रिक्स की सहयोग और साझा विकास की भावना से जुड़ा हुआ बताया। विशेषज्ञों के अनुसार, एआई, डिजिटल भुगतान और तकनीकी सहयोग आने वाले समय में ब्रिक्स देशों के बीच आर्थिक संबंधों को एक नई और सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकते हैं, जिससे सदस्य देशों की अर्थव्यवस्थाओं को अभूतपूर्व मजबूती मिलेगी और वैश्विक स्तर पर उनका प्रभाव बढ़ेगा।

मातृभाषा को प्राथमिकता देना हमारी सरकार की नीति, विवादों का समाधान राज्य नेतृत्व करेगा: अमित शाह

मुंबई, (ईएमएस)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि मातृभाषा को प्राथमिकता देना केंद्र सरकार की नीति का हिस्सा है और मातृभाषा को लेकर किसी बड़े संघर्ष की स्थिति पैदा होगी, ऐसा उन्हें नहीं लगता। उन्होंने कहा कि राज्यों के पास अनुभवी नेतृत्व है और स्थानीय स्तर पर उठने वाले विवादों का उचित समाधान निकालने में राज्य नेतृत्व पूरी तरह सक्षम है। कुछ लोग जानबूझकर विवाद को भड़काने या उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं, लेकिन ऐसे मामलों में राज्य नेतृत्व उचित रास्ता निकाल सकता है। मुंबई में आयोजित पत्रकार परिषद में अमित शाह ने कहा कि 2014 से पहले देश भ्रष्टाचार, परिवारवाद और जातिवाद जैसी समस्याओं से जूझ रहा था, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले वर्षों में देश ने इन चुनौतियों से बाहर निकलते हुए विकास की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाया है। अमित शाह ने केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं और विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए दावा किया कि पिछले कुछ वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं और करीब 16 करोड़ लोगों को अपना घर मिला है। उन्होंने कहा कि किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत आर्थिक सहायता दी जा रही है, जबकि उज्ज्वला योजना के माध्यम से करोड़ों परिवारों को गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए गए हैं। उन्होंने दावा किया कि केंद्र सरकार के प्रयासों से नक्सलवाद पर भी प्रभावी ढंग से अंकुश लगाया गया है।

- मोदी के 25 साल के सार्वजनिक नेतृत्व का उल्लेख

अमित शाह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राजनीतिक सफर का उल्लेख करते हुए कहा कि मोदी ने शासन प्रमुख के तौर पर 25 वर्ष पूरे किए हैं। उन्होंने पहले गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में और बाद में देश के प्रधानमंत्री के रूप में जिम्मेदारी संभाली। शाह ने इसे एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए कहा कि इसी अवसर पर भारतीय जनता पार्टी की ओर से 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक 'सेवा संकल्प अभियान' चलाया जाएगा। इस अभियान के तहत देशभर में विभिन्न सेवा और जनकल्याण से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

- 'जेन-जी' आंदोलन पर विपक्ष को घेरा

'जेन-जी' आंदोलनों के सवाल पर अमित शाह ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि भारत एक मजबूत लोकतांत्रिक देश है और भाजपा भारतीय लोकतंत्र तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि भाजपा कांग्रेस की तरह 'इमरजेंसी माइंडसेट' में विश्वास नहीं करती। शाह के मुताबिक, लोकतंत्र में जनता को आंदोलन करने का अधिकार है और सरकार इस अधिकार का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक तरीके से होने वाले किसी भी आंदोलन की आवाज दबाने का सरकार का प्रयास नहीं होता। शाह के इन बयानों को भाषा, लोकतांत्रिक अधिकारों और केंद्र सरकार की उपलब्धियों के साथ-साथ आने वाले राजनीतिक अभियान के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

CHANGE OF NAME

OLD NAME :- SHAIKH AZRODDIN
NEW NAME:- AZHARUDDIN KUTBUDDIN SHAIKH
FATHER OLD NAME:-SHAIKH KUBUDDIN
FATHER NEW NAME:- KUTBUDDIN SAMSUDDIN SHAIKH

CHANGE OF NAME

OLD NAME :- NIZAMUDDIN KUTBUDDIN SHAIKH
NEW NAME :- NIZAMUDDIN KUTBUDDIN SHAIKH
FATHER OLD NAME:-KUTBUDDIN SHAIKH
FATHER NEW NAME - KUTBUDDIN SAMSUDDIN SHAIKH

भगवान गणेश : मंगल, समृद्धि और विकसित भारत के प्रेरणास्रोत

ललित गर्ग

गणेशजी का सबसे बड़ा संदेश है–शुभारंभ करो, लेकिन विवेक के साथ। किसी भी कार्य के पहले गणेशजी का स्मरण इस बात का प्रतीक है कि सफलता केवल गति से नहीं, सही दिशा से मिलती है। विकसित भारत का निर्माण भी केवल बड़े आर्थिक आंकड़ों, आधुनिक शहरों, नई तकनीक और विशाल परियोजनाओं से नहीं होगा। इसके लिए ऐसी विकास-दृष्टि चाहिए जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय संवेदना, नैतिकता, पर्यावरण-संतुलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय का समन्वय हो।

गणेशजी के व्यक्तित्व में छिपे प्रबंधन, नेतृत्व, ज्ञान, अनुशासन और समावेशी विकास के सूत्रों को आत्मसात कर भारत 2047 के संकल्प को नई दिशा दी जा सकती है...

भगवान श्री गणेश भारतीय संस्कृति के ऐसे बहुआयामी एवं सर्वस्वीकार्य देवता हैं, जिनका स्मरण किसी भी शुभ कार्य के प्रारंभ में किया जाता है। वे केवल विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता के रूप में पूजित नहीं हैं, बल्कि उनका संपूर्ण व्यक्तित्व ज्ञान, विवेक, दूरदर्शिता, नेतृत्व, धैर्य, आत्मसंयम, संवाद, समावेशिता और कर्मशीलता का अद्भुत संदेश देता है। आज जब भारत विकसित भारत 2047 के संकल्प के साथ आर्थिक शक्ति, तकनीकी क्षमता, सामाजिक समरसता और वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब गणेशजी के प्रतीकात्मक व्यक्तित्व को केवल पूजा तक सीमित रखने के बजाय उनके जीवन-संदेश को राष्ट्रीय चरित्र और विकास-दृष्टि का आधार बनाना समय की बड़ी आवश्यकता है। गणेश चतुर्थी केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और राष्ट्रनिर्माण की प्रेरणा का पर्व बन सकती है।

गणेशजी का सबसे बड़ा संदेश है–शुभारंभ करो, लेकिन विवेक के साथ। किसी भी कार्य के पहले गणेशजी का स्मरण इस बात का प्रतीक है कि सफलता केवल गति से नहीं, सही दिशा से मिलती है। विकसित भारत का निर्माण भी केवल बड़े आर्थिक आंकड़ों, आधुनिक शहरों, नई तकनीक और विशाल परियोजनाओं से नहीं होगा। इसके लिए ऐसी विकास-दृष्टि चाहिए जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय संवेदना, नैतिकता, पर्यावरण-संतुलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक न्याय का समन्वय हो। गणेशजी का स्मरण हमें बताता है कि विकास का पहला कदम बाहर नहीं, भीतर उठता है–विचारों की शुद्धता और संकल्प की दृढ़ता से।

गणेशजी का गजमुख उनकी सबसे विशिष्ट पहचान है। हाथी भारतीय मानस में बुद्धि, स्मृति, धैर्य और शक्ति का प्रतीक रहा है। बड़ा मस्तक हमें बड़ा सोचने की प्रेरणा देता है। आज भारत को भी सीमित सोच से बाहर निकलकर वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप दीर्घकालीन और व्यापक दृष्टि विकसित करनी होगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान, डिजिटल अर्थव्यवस्था, हरित ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और नई औद्योगिक क्रांति के युग में वही राष्ट्र आगे बढ़ेगा जो ज्ञान को अपनी सबसे बड़ी शक्ति बनाएगा। गणेशजी का मस्तक मानो संदेश देता है–ज्ञान जितना व्यापक होगा, विकास उतना ही दूरगामी होगा।

उनके बड़े कान लोकतांत्रिक नेतृत्व की अनूठी सीख देते हैं। अच्छा नेतृत्व वह नहीं जो केवल बोलता है, बल्कि वह

है जो सुनता है। जनता की आकांक्षाओं, युवाओं के सपनों, किसानों की समस्याओं, श्रमिकों की चुनौतियों, महिलाओं की अपेक्षाओं और वंचित वर्गों की आवाज को सुनना ही संवेदनशील शासन की पहचान है। भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बने, इसके लिए विकास का मॉडल जनभागीदारी पर आधारित होना चाहिए। गणेशजी के बड़े कान हमें सिखाते हैं कि जनता की आवाज सुनना ही सुशासन की पहली शर्त है।

उनकी छोटी आंखें एकाग्रता और सूक्ष्म दृष्टि का प्रतीक मानी जाती हैं। आज सूचना और विकल्पों की अधिकता के दौर में ध्यान भटकना आसान है। राष्ट्र के सामने भी अनेक चुनौतियां हैं। इसलिए लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए और ऊर्जा अनावश्यक विवादों में नहीं, राष्ट्र के निर्माण में लगनी चाहिए। विकसित भारत का लक्ष्य तभी सार्थक होगा जब व्यक्ति से लेकर शासन तक प्राथमिकताओं की स्पष्टता, कार्य में एकाग्रता और परिणाम के प्रति प्रतिबद्धता हो।

गणेशजी की सूंड अत्यंत संवेदनशील होने के साथ शक्तिशाली भी है। वह सूक्ष्म वस्तु को भी संभाल सकती है और भारी कार्य भी कर सकती है। यह क्षमता हमें परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने की प्रेरणा देती है। आज के भारत को भी यही लचीलापन चाहिए। तकनीक बदल रही है, रोजगार के स्वरूप बदल रहे हैं, वैश्विक अर्थव्यवस्था बदल रही है और पर्यावरणीय चुनौतियां बढ़ रही हैं। जो समाज परिवर्तन को समझकर अपनी क्षमता विकसित करेगा, वही भविष्य का नेतृत्व करेगा।

गणेशजी का लंबोदर भी गहरा जीवन-संदेश देता है। इसे विशाल हृदय, सहनशीलता और जीवन की विविधताओं को आत्मसात करने की क्षमता का प्रतीक माना जा सकता है। राष्ट्रनिर्माण में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन मनभेद विनाशकारी हो सकते हैं। भारत की शक्ति उसकी विविधता में है। भाषा, संस्कृति, परंपरा, विचार और जीवन-पद्धति की विविधता को संघर्ष का कारण नहीं, राष्ट्रीय शक्ति का आधार बनाना होगा। गणेशजी का व्यक्तित्व हमें समावेशी भारत की प्रेरणा देता है–ऐसा भारत जिसमें विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और कोई स्वयं को राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग महसूस न करे।

गणेशजी का वाहन मूषक भी अत्यंत अर्थपूर्ण प्रतीक है। विशालकाय गजानन का वाहन एक छोटा-सा मूषक है। यह मानो अहंकार पर नियंत्रण और छोटे से छोटे तत्व के महत्व को स्वीकार करने का संदेश देता है। आधुनिक भारत में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं और बड़ी परियोजनाओं के साथ छोटे उद्यमी, कारीगर, किसान, स्टार्टअप, स्थानीय व्यवसाय और सामान्य नागरिक भी विकास की धुरी हैं। विकसित भारत का अर्थ केवल बड़े भारत से नहीं, बल्कि हर व्यक्ति को अवसर देने वाले भारत से है।

गणेशजी की चार भुजाएं कर्म, ज्ञान, विवेक और संतुलन के समन्वय का संदेश देती हैं। आज भारत को ज्ञान और कौशल से संपन्न युवा चाहिए, उद्यमशील नागरिक चाहिए और ऐसे संस्थान चाहिए जो नवाचार को प्रोत्साहित करें। केवल डिग्री नहीं, उपयोगी ज्ञान; केवल नौकरी नहीं, रोजगार सृजन; केवल उपभोग नहीं, उत्पादन–यही विकसित भारत की आधारभूमि बन सकती है।

गणेशजी को विघ्नहर्ता कहा जाता है, लेकिन विघ्नों को समाप्त करने का वास्तविक अर्थ समस्याओं से पलायन नहीं, बल्कि उनका साहसपूर्वक सामना करना है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, प्रदूषण और अंधविश्वास जैसे राष्ट्रीय विघ्न केवल कानूनों से नहीं, सामूहिक चेतना और नागरिक जिम्मेदारी से दूर होंगे। गणेशजी का साहस हमें बताता है कि कठिनाई जितनी बड़ी हो, संकल्प उससे बड़ा होना चाहिए।

ऋद्धि और सिद्धि का गणेशजी से जुड़ाव भी विकास की व्यापक अवधारणा को स्पष्ट करता है। केवल धन-संपदा ऋद्धि नहीं और केवल उपलब्धि सिद्धि नहीं; दोनों का संतुलन आवश्यक है। भारत की आर्थिक समृद्धि के साथ ज्ञान, संस्कार, नैतिकता और मानवीय मूल्यों की सिद्धि भी होनी चाहिए। तभी समृद्धि स्थायी और सार्थक बनेगी। शुभ और लाभ का संदेश भी यही है कि उपलब्धि तभी शुभ है जब वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के व्यापक हित में हो।

गणेशजी को प्रथम पूज्य और बुद्धि के देवता के रूप में स्मरण करने की भारतीय परंपरा आज के भारत के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। जब देश 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है, तब आवश्यकता केवल सरकारों के प्रयासों की नहीं, बल्कि विकसित सोच वाले नागरिकों की है। प्रत्येक भारतीय अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, उत्कृष्टता, नवाचार, अनुशासन और राष्ट्रहित को प्राथमिकता दे, तो विकास का लक्ष्य जनआंदोलन बन सकता है।

गणेश चतुर्थी इसलिए हमें केवल प्रतिमा स्थापित करने और उत्सव मनाने का अवसर न दे, बल्कि अपने भीतर गणेशत्व जगाने का संकल्प दे। बुद्धि में विशालता हो, दृष्टि में दूरदर्शिता हो, कानों में संवेदनशीलता हो, वाणी में मधुरता हो, कर्म में शक्ति हो, मन में धैर्य हो और व्यवहार में समावेशिता हो–यही गणेशजी की वास्तविक आराधना है। जब भारत का नागरिक अपने भीतर के विघ्नों–अज्ञान, आलस्य, अहंकार, स्वार्थ और संकीर्णता–पर विजय प्राप्त करेगा, तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा।

भगवान गणेश का संदेश अंततः यही है कि मंगल बाहर से नहीं आता, उसे अपने विचार, व्यवहार और कर्म से निर्मित करना पड़ता है। यदि गणेशजी की बुद्धि, विवेक, धैर्य, साहस, श्रवणशीलता, आत्मसंयम और समावेशी दृष्टि को राष्ट्रीय जीवन का हिस्सा बनाया जाए, तो भारत केवल आर्थिक रूप से विकसित राष्ट्र नहीं, बल्कि समृद्ध, संस्कारित, संवेदनशील, आत्मनिर्भर और विश्व को दिशा देने वाला आदर्श राष्ट्र बन सकता है। यही गणेश चतुर्थी की सबसे बड़ी राष्ट्रीय साधना और विकसित भारत 2047 के संकल्प की सार्थक परिणति होगी।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

व्यापार घाटे का ब्रिक्स

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन का आगाज हो चुका है। चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के आगमन की भी पुष्टि हो चुकी है। शुक्रवार को प्रधानमंत्री मोदी और रूसी राष्ट्रपति पुतिन के बीच द्विपक्षीय मुलाकात हुई। कई समझौते परवान चढ़े। उनका विश्लेषण अलग से किया जाएगा। दरअसल हमने ईरान युद्ध के संदर्भ में इस शिखर सम्मेलन का विश्लेषण किया था। आज भारत की अर्थव्यवस्था, ब्रिक्स देशों के साथ व्यापार और भारत के निरंतर घाटे की चर्चा कर रहे हैं। ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब भी ब्रिक्स के सदस्य देश हैं। फिलहाल उनके बीच एक विनाशक, विध्वंसक युद्ध जारी है। ईरान ने उनके तेल ठिकानों, रिफाइनरियों, संयंत्रों पर ऐसे हमले किए हैं कि उनके उत्पादन खत्म हो गए हैं या वे भस्म हो गए हैं, नतीजतन दुनिया संकट में है। हालांकि अमरीका-इजरायल इस युद्ध के ह्यनरसंहारी चेहरेह्न हैं। ईरान युद्ध के कारण अभी तक भारत को 2 लाख करोड़ रुपए से अधिक का ह्यराजकोषीय धक्काह्न लग चुका है। यह अनुमान है, जबकि हकीकत इससे ज्यादा हो सकती है! इसी के कारण हमारा चालू खाता घाटा भी जीडीपी का 1.9 फीसदी से 2 फीसदी तक बढ़ चुका है। विशेषज्ञों के आकलन हैं कि 2026-27 की आखिरी विकास दर 6.5 फीसदी के करीब हो सकती है, लिहाजा एक तिमाही की 7.8 फीसदी विकास दर पर अधिक फुलफुलाना नहीं चाहिए। भारत ब्रिक्स देशों-चीन, रूस, अमीरात, सऊदी, ब्राजील-के साथ लगातार कारोबार करता रहा है, लेकिन चिंता की बात यह है कि हम लगातार व्यापार-असंतुलन के शिकार हो रहे हैं और भारत आज तक ह्यनिराश्रितह्न, असहाय, लाचार है। ह्यआत्मनिर्भरताह्न तो बहुत दूर की कौड़ी है। चीन के साथ भारत का व्यापार-घाटा 9.92 लाख करोड़ रुपए का है, तो रूस की तुलना में भारत 4.48 लाख करोड़ रुपए के घाटे में है। संयुक्त अरब अमीरात के साथ करीब 2.34 लाख करोड़ रुपए और सऊदी अरब के साथ भी करीब 1.81 लाख करोड़ रुपए का व्यापार-घाटा हम झेल रहे हैं। ब्राजील सरीखे अपेक्षाकृत छोटे देश के साथ भी भारत का व्यापार-घाटा करीब 9579 करोड़ रुपए का है।

चिंतन-मनन

जीवन एक क्रिकेट मैच

प्रांतिकारी संत तरुणसागरजी ने क्रिकेट की व्याख्या करते हुए कहा कि जीवन एक क्रिकेट है, धरती की विराट पिच पर समय बॉलिंग कर रहा है। शरीर बल्लेबाज है, परमात्मा के इस आयोजन पर अम्पायर धर्मराज हैं। बीमारियाँ फील्डिंग कर रही हैं, विकेटकीपर यमराज हैं, प्राण हमारा विकेट है, जीवन एक क्रिकेट है। इस डे-नाइट मैच में हमें रचनात्मकता के जलवे दिखाने हैं और साँसों के सीमित ओवर में सृजन के रन बनाने हैं। गिल्लियाँ उड़ने का अर्थ साँस का टूट जाना है, एलबीडब्ल्यू यानी हार्ट-अटैक। दुर्घटना में मरने वाला रन आउट कहलाता है और सीमा पर शहीद होने वाला कैच आउट कहा जाता है। आत्महत्या का अर्थ हिट विकेट और हत्या स्टम्प आउट हो जाना है।

कभी-कभी कुछ आप्रामक खिलाड़ी जल्दी ही पैवेलियन लौट जाते हैं, लेकिन पारी ऐसी खेलते हैं कि कीर्तिमान बना जाते हैं, सबका अपना-अपना रन रेट है, जीवन एक क्रिकेट है। घर आए अतिथि को भोजन के लिए पूछा करो, भोजन के लिए नहीं पूछ सकते तो पानी के लिए पूछा करो, पानी का नहीं पूछ सकते हैं तो बैठने के लिए आसन दिया करो। बैठने के लिए आसन भी नहीं दे सकते तो दो मीठे बोल बोला करो। दो मीठे बोल नहीं बोल सकते, मुस्कुराहट भी नहीं दे सकते तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो। उक्त प्रेरक विचार उन्होंने प्रवचनमाला में व्यक्त किए। हाथों में मोबाइल हो न हो, चेहरे पर स्माइल हर हाल में होना चाहिए। आदमी स्मार्ट मोबाइल से नहीं, मुस्कुराहट से बनता है। हँसना पुण्य है और हँसाना परमपुण्य है। जब आप हँसते हैं तो आप ईश्वर की आराधना करते हैं। जब आप किसी रोते हुए को हँसाते हो तो ईश्वर आपकी आराधना करता है। दुनिया के सामने रोने की आवश्यकता नहीं है। जब पाँच सेकंड मुस्कुराने से फोटो अच्छी आ सकती है तो जिंदगी भर मुस्कुराने से जिंदगी क्यों नहीं अच्छी हो सकती।

राजनीतिक लोग पार्टियाँ बदल लेते हैं, बैनर बदल लेते हैं, भाषण बदल जाता है, टोपी बदल जाती है, लेकिन टोपी के नीचे जो खोपड़ी है वही नहीं बदलती। मैं कहता हूँ टोपी को नहीं, खोपड़ी बदलो। आप अपने से बेखबर हैं, कानों के साथ आँखों का उपयोग किया करो। किसी ने कहा है वो दिल के बहुत अच्छे हैं, लेकिन कानों के कच्चे हैं। आदमी सुनी-सुनाई बातों पर यकीन कर लेता है और बरसों की दोस्ती दुश्मनी में बदल जाती है। एसटीडी कॉल करने से पहले शून्य लगाना जरूरी है। उसी तरह गुरु के पास भी जाने से पहले मन का शून्य होना जरूरी है। मन खाली होगा तभी तो कुछ भर पाओगे। शक का कीड़ा एक बार दिमाग में घुस जाए तो उसका कोई इलाज नहीं होता।

एक बातचीत किसी की जिंदगी बचा सकती है

कांतिलाल मांडोत

युवाओं की खामोशी को समझना होगा तनाव और अवसाद के बीच साथ का हाथ सबसे बड़ी मदद

आज का युवा सपनों, महत्वाकांक्षाओं और नई संभावनाओं से भरी दुनिया में आगे बढ़ना चाहता है, लेकिन इसी दौड़ में उसके सामने मानसिक दबाव भी तेजी से बढ़ रहा है। पढ़ाई में अच्छे अंक लाने की चिंता, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, करियर को लेकर असमंजस, नौकरी की अनिश्चितता, परिवार की अपेक्षाएं, मित्रों और रिश्तों से जुड़ी परेशानियां तथा सामाजिक तुलना कई बार मन पर ऐसा बोझ डाल देती हैं, जिसे युवा अकेले संभाल नहीं पाता। बाहर से सामान्य दिखाई देने वाला व्यक्ति भीतर ही भीतर किसी बड़े संघर्ष से गुजर रहा हो सकता है। इसलिए मानसिक परेशानी को कमजोरी समझने के बजाय उसे समय रहते पहचानना और संवेदनशीलता के साथ सुनना आज की बड़ी जरूरत है।

किसी व्यक्ति के जीवन में संकट अचानक दिखाई दे सकता है, लेकिन उसके पीछे चल रहा मानसिक संघर्ष अक्सर लंबे समय से जमा होता रहता है। परेशानी तब और बढ़ जाती है जब व्यक्ति अपनी बात किसी से कह नहीं पाता। उसे लगता है कि परिवार उसकी स्थिति नहीं समझेगा, मित्र उसका मजाक बनाएंगे या समाज उसे कमजोर मान लेगा। यही सोच उसे धीरे-धीरे लोगों से दूर कर सकती है। इसलिए परिवार और समाज की जिम्मेदारी केवल यह पूछने तक सीमित नहीं होनी चाहिए कि पढ़ाई कैसी चल रही है या नौकरी की तैयारी कितनी हुई। यह भी पूछना जरूरी है कि मन कैसा है, क्या कोई परेशानी है और क्या वह किसी बात को लेकर लगातार तनाव में है।

मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुभव बताते हैं कि आत्महत्या जैसी गंभीर स्थिति के पीछे सामान्यतः कोई एक कारण नहीं होता। कई बार छोटी-छोटी परेशानियां एक साथ मिलकर मानसिक दबाव को बढ़ा देती हैं। परीक्षा में असफलता किसी विद्यार्थी के लिए बहुत बड़ी घटना हो सकती है, वहीं किसी दूसरे युवा के लिए रिश्ते में आई परेशानी, आर्थिक संकट या भविष्य को लेकर अनिश्चितता अधिक भारी पड़ सकती है। बुलिंग, रैगिंग, पारिवारिक विवाद, अकेलापन और लगातार दूसरों से अपनी तुलना करना भी मानसिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है। जब इन परिस्थितियों के बीच व्यक्ति को भावनात्मक सहारा नहीं मिलता तो उसकी परेशानी गंभीर रूप ले सकती है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मानसिक परेशानी हमेशा शब्दों में सामने नहीं आती। कई युवा सीधे यह नहीं कहते कि वे तनाव में हैं या उन्हें मदद चाहिए। उनके व्यवहार में बदलाव दिखाई दे सकता है। जो व्यक्ति पहले परिवार और दोस्तों से खुलकर बात करता था, वह अचानक चुप रहने लगे, सामाजिक गतिविधियों से दूरी बनाने लगे या अपनी पसंदीदा चीजों में रुचि खो दे तो इसे सामान्य बदलाव मानकर छोड़ देना ठीक नहीं है। नींद और भोजन की आदतों में बदलाव, लगातार चिड़चिड़ापन, निराशा, पढ़ाई या काम में ध्यान न लगना और स्वयं को दूसरों के लिए परेशानी मानने जैसी बातें भी संकेत हो सकती हैं कि व्यक्ति को भावनात्मक सहयोग की जरूरत है।

ऐसे समय में सबसे पहला कदम सलाह देना नहीं, बल्कि सुनना होना चाहिए। कई बार हम किसी परेशान व्यक्ति की बात पूरी होने से पहले ही उसे समझाने लगते हैं। उसे कहा जाता है कि यह तो छोटी बात है, सब ठीक हो जाएगा या दूसरे लोगों की स्थिति तुमसे भी खराब है। इस तरह की बातें समस्या को कम नहीं करतीं, बल्कि व्यक्ति को यह महसूस करा सकती हैं कि उसकी परेशानी को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा। इसके बजाय शांत होकर उसकी बात सुनना, उसके अनुभव को समझने का प्रयास करना और यह भरोसा दिलाना कि वह अकेला नहीं है, बहुत बड़ा सहारा बन सकता है।

युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य को लेकर परिवार की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। माता-पिता को केवल परिणाम और उपलब्धियों पर ध्यान देने के बजाय बच्चों की भावनात्मक स्थिति को भी समझना होगा। हर परीक्षा जीवन का अंतिम फैसला नहीं है और हर असफलता भविष्य का अंत नहीं होती। बच्चों को यह भरोसा मिलना चाहिए कि वे अपनी परेशानी खुलकर बता सकते हैं और किसी गलती या असफलता के कारण उनका महत्व कम नहीं होता। परिवार में ऐसा वातावरण बने जहां संवाद के लिए डर नहीं, विश्वास हो।

संस्कृति, संवाद और आत्मगौरव का उत्सव है हिन्दी दिवस

योगेश कुमार गोयल

हर वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाने वाला हिन्दी दिवस उस गौरव की स्मृति के रूप में मनाया जाता है, जब हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया गया था। यह दिवस हिन्दी की समृद्धि, स्वीकार्यता, रचनात्मकता और वैश्विक विस्तार का उत्सव है। निरंतर बढ़ती हिन्दी शक्ति आज न केवल भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रशासनिक परिदृश्य को आकार देती है बल्कि विश्व मंच पर भी अपनी प्रगाढ़ छाप छोड़ रही है। आज दुनियाभर में हिन्दी चाहने वालों, बोलने या पढ़ने-समझने वाले लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हिन्दी को लेकर भारतीय और विदेशी विद्वानों, साहित्यकारों तथा विभूतियों का आदर भाव वर्षों से रहा है।

डा. फादर कामिल बुल्के, जिन्होंने हिन्दुस्तानी संस्कृति को आत्मसात किया, हिन्दी को गृहिणी की संज्ञा देते हुए कहा था कि यह भारतीय जीवन का अभिन्न हिस्सा है। संस्कृत को तो वे मां मानते थे और अंग्रेजी को नौकरानी। इसी तरह आयरिश प्रशासक जॉन ग्रियर्सन ने हिन्दी को संस्कृत की बेटियों में सबसे सुंदर और शिरोमणि बताया। ऐसे तमाम उदाहरण इस बात के प्रमाण हैं कि हिन्दी, शब्द और विचार के धरातल पर विभिन्न भाषाओं से जितनी आत्मीयता रखती है, उतनी ही भारत के जनमानस से जुड़ी है लेकिन दुखद है कि आज भी पुनरुत्थानवादी मानसिकता वाले कुछ लोग हिन्दी की व्यापकता, समृद्धि और ताकत को नजरअंदाज करते हैं और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को स्थान नहीं मिलने की बात पर कुतर्क करके उसके वैश्विक पक्ष को कमतर आंकते हैं। हालांकि ऐसी नकारात्मक चर्चाओं से न हिन्दी का कुछ भला हो सकता है, न ही उसका अस्तित्व डिग सकता है। तथ्य यही है कि आज विश्वभर में हिन्दी बोलने वालों का आंकड़ा करोड़ों में है और यह निरंतर बढ़ रहा है।

हिन्दी की ताकत को जानना हो तो उसके सांस्कृतिक, भावनात्मक और रचनात्मक विस्तार को देखना होगा। मातृभाषा का ज्ञान किसी भी व्यक्ति के मन की पीड़ा का सबसे अच्छा समाधान है। महापुरुषों, विद्वानों और नेताओं ने समय-समय पर हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित किया है। पुरुषोत्तमदास टंडन मानते थे कि जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दी अपनी भूमिका निभाने में समर्थ है। महात्मा गांधी ने हिन्दी को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संवाद व जनसंपर्क का सबसे शक्तिशाली माध्यम माना। उनके शब्द थे कि सम्पूर्ण भारत की पारस्परिकता के लिए ऐसी भाषा चाहिए, जो जनता का बड़ा भाग जानता-समझता हो। गांधीजी कहते थे, ह्यदिल की कोई भाषा नहीं है, दिल से दिल संवाद करता है और राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।ह्न ये कथन आज भी वैसी ही सार्थकता के साथ जीवंत हैं। अमेरिकी चिकित्सक वॉल्टर चेनिंग तो यह मानते थे कि विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र की शिक्षा एवं प्रशासन की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है। माखनलाल चतुर्वेदी और राहुल सांस्कृत्यायन ने हिन्दी को देश और भाषा की विरासत, सांस्कृतिक धरातल और अधिष्ठान के रूप में देखा। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने तो यहां तक कहा कि राष्ट्रीय एकता का बंधन केवल हिन्दी ही जोड़ सकती है।

हिन्दी की ऊर्जा और आत्मबल का उदाहरण महात्मा गांधी के हिन्दी प्रेम का एक प्रसंग भी है। सन् 1917 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में बाल गंगाधर तिलक ने अंग्रेजी में भाषण दिया था। गांधीजी ने तिलक को स्पष्ट समझाया कि देशवासियों के साथ अपनी ही भाषा में संवाद ही सही अर्थों में दिलों तक पहुंच सकता है। यह भावप्रवण संवाद भारत के हर नागरिक के गौरव का स्रोत है। महात्मा गांधी ने विविध अवसरों पर हिन्दी को राष्ट्र की आत्मा कहा था। आज हिन्दी का विस्तार भारत तक सीमित नहीं रहा। कई देशों में हिन्दी लोगों के दिलों में बसती है, जहां की स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी भी संगठित रूप से बोली जाती है। दुनियाभर में सैंकड़ों विश्वविद्यालयों, शैक्षिक संस्थाओं, शोध केंद्रों और अनगिनत प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी पढ़ाई जाती है, शोध होती है और यह वहां अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान की भाषा बन चुकी है। विश्वभर में लगभग 75 करोड़ लोग हिन्दी बोलते समझते हैं और एथ्नोलॉग जैसी अंतर्राष्ट्रीय भाषायी संस्थाओं की रिपोर्ट के मुताबिक, यह विश्वभर में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है, जो तेजी से ऊपर की ओर बढ़ रही है।

हिन्दी का वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव भी आश्चर्यचकित करता है। भारतीय फिल्म उद्योग, जिसे दुनियाभर में ह्यबॉलीवुडह्न के नाम से जाना जाता है, हर साल करीब 1500 फिल्में हिन्दी में बनाता है। ये फिल्में भारत में ही नहीं, अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, खाड़ी देशों सहित अनेक देशों में देखी जाती हैं। हिन्दी फिल्मों, गीतों, साहित्य और कला का प्रभाव विदेशी मंचों, सांस्कृतिक समारोहों, मीडिया एवं एफएम चैनलों तक फैला हुआ है। यूएई में हिन्दी एफएम चौनल स्थानीय लोगों की खास पसंद बन चुके हैं। हिन्दी फिल्म अभिनेता, निमार्ता व कलाकार विदेशों में शो आयोजित करते हैं, जिससे भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा का विस्तार होता है। जहां-जहां भारतवंशी बसे हैं, वहां हिन्दी विशेष सम्मान के साथ जीवंत है। यह यथार्थ हर भारतीय के लिए गर्व का विषय है।

वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी व्यापार, वाणिज्य, शिक्षा, तकनीकी और प्रशासन के क्षेत्र में निरंतर बढ़ रही है। फेसबुक, गूगल, यूट्यूब जैसी कंपनियों ने हिन्दी को प्राथमिकता देना शुरू कर दिया है। भारत में 80 प्रतिशत मोबाइल उपभोक्ता हिन्दी में सामग्री अपनाते हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर हिन्दी की उपस्थिति लगातार बढ़ रही है और इसका प्रसार इतनी गति से हो रहा है कि कुछ ही वर्षों में हिन्दी इंटरनेट की प्रमुख भाषा बन सकती है। हिन्दी की संवैधानिक सुरक्षा भारत में संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 के तहत निश्चित है। यह धाराएं हिन्दी के प्रचार-प्रसार, स्वीकार्यता और संरक्षण का मजबूत

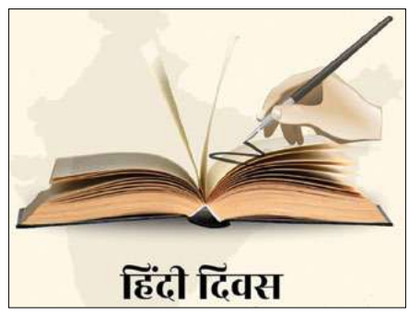

आधार हैं। यह न केवल भारत की आधिकारिक भाषा है बल्कि सम्पर्क भाषा, प्रशासन और विधि के क्षेत्र में इसका प्रयोग निर्णायक रूप से हो रहा है। भारत के शैक्षिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों और सांस्कृतिक आयोजनों में हिन्दी को सम्मानपूर्वक अपनाया गया है। विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना, हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की मान्यता दिलवाने की पहल और डिजिटल क्षेत्र में हिन्दी सशक्तीकरण, ये सभी कदम हिन्दी के वैश्विक मंच पर सशक्तीकरण की दिशा में उठाए गए हैं।

कुल मिलाकर, हिन्दी दिवस केवल एक दिन का उत्सव नहीं, यह हमारी संस्कृति, भाषायी आत्मसम्मान और राष्ट्रीय एकता का दिन है। इस दिन हर भारतीय को यह संकल्प लेना चाहिए कि हिन्दी को रचनात्मक, सुंदर और समृद्ध बनाए रखने में अपना योगदान दे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का सपना केवल राजभाषा का प्रतिष्ठापन नहीं था बल्कि भारत की आत्मा, उसकी विविधता और सांस्कृतिक गौरव की अभिव्यक्ति थी, जिसे हिन्दी ने बखूबी आकार दिया है। हिन्दी भाषा की बढ़ती ताकत और वैश्विक प्रतिष्ठा आज न केवल भारत की बल्कि विश्व संस्कृति की सबसे मजबूत और सुंदर कड़ी बन चुकी है। इसलिए, हिन्दी दिवस के अवसर पर यही प्रेरणा लें कि जीवन के हर क्षेत्र में हिन्दी का उत्कर्ष हो, इसकी भाषायी, सांस्कृतिक, साहित्यिक और तकनीकी शक्ति निरंतर बढ़ती रहे और आगामी पीढ़ियां हिन्दी को न केवल संवाद का बल्कि वैश्विक अभिव्यक्ति का सबसे प्रभावशाली माध्यम बनाएं।

संक्षिप्त समाचार

भूकंप से फिर हिल उठी तिब्बत की धरती, रिक्टर स्केल पर कितनी रही तीव्रता?

ल्हासा , एजेंसी। भारत के पड़ोस में तिब्बत की धरती शुक्रवार को भूकंप से हिल उठी है। बीते कुछ दिनों से इस क्षेत्र में बार-बार भूकंप की घटना देखने को मिल रही है। आइए जानते हैं कि रिक्टर स्केल पर कितनी रही इस भूकंप की तीव्रता। भारत समेत दुनियाभर के अनेक देशों में लगातार हो रही भूकंप की घटनाओं ने लोगों के मन में डर बैठा दिया है। भूकंप के कारण बीते कुछ समय में हजारों लोगों की मौत भी हुई है। अब भारत के पड़ोस में स्थित तिब्बत में भी शुक्रवार को सुबह-सुबह भूकंप के कारण धरती हिल उठी है। सामने आई जानकारी के अनुसार, तिब्बत में आए इस भूकंप की तीव्रता 3.7 मापी गई है। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी ने शुक्रवार को तिब्बत में आए भूकंप के बारे में जानकारी दी है। संस्थान के अनुसार, शुक्रवार को सुबह 4 बजकर 2 मिनट पर तिब्बत में भूकंप आया है। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 3.7 मापी गई है। इस भूकंप का केंद्र धरती से 30 किलोमीटर की गहराई में था। आपको बता दें कि इससे पहले 8 सितंबर को भी तिब्बत में 5.3 तीव्रता का भूकंप आया था। इस भूकंप के झटके नेपाल में भी महसूस किए गए थे। नेशनल सेंटर फॉर सिस्मोलॉजी ने बताया है कि शुक्रवार को सुबह 6 बजकर 56 मिनट पर पश्चिम बंगाल में भी भूकंप के झटके लगे हैं। जानकारी के अनुसार, ये भूकंप राज्य के अलीद्वारपुर में आया है। इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3 मापी गई है। भूकंप का केंद्र धरती से 9 किमी की गहराई में था। इसके अलावा शुक्रवार को अफगानिस्तान में भूकंप के झटके लगे हैं। ये भूकंप 3.5 की तीव्रता का था और इसका केंद्र धरती से 163 किलोमीटर भीतर था। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि भूकंप आने का कारण मुख्य तौर पर धरती के भीतर मौजूद टेक्टोनिक प्लेटों का आपस में टकराना, रगड़ना या खिसकना होता है। इसके कारण जमीन के अंदर जमा ऊर्जा अचानक से बाहर की ओर निकलती है। इसके कारण धरती पर भूकंप के झटके महसूस किए जाते हैं। कई बार भूकंप हल्की तीव्रता के होते हैं। हालांकि, कई बार भूकंप की तीव्रता इतनी ज्यादा होती है कि वह एक बड़े इलाके को पूरी तरह तबाह कर देती है और हजारों लोगों की मौत का कारण बनती है।

क्रोएशिया के स्कूल में छात्र ने दो को मारा चाकू;

जाग्रेब, एजेंसी। क्रोएशिया की राजधानी जाग्रेब के एक हाईस्कूल में शुक्रवार को एक छात्र ने दूसरे छात्र और स्कूल के एक कर्मचारी पर चाकू से हमला कर दिया। पुलिस ने आरोपी छात्र को हिरासत में ले लिया है। शिक्षा मंत्रालय के मुताबिक, हमले में किसी धारदार वस्तु का इस्तेमाल किया गया। घायल छात्र को कई चोटों के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसकी सर्जरी हुई। डॉक्टरों ने उसकी हालत खतरे से बाहर बताई है। स्कूल कर्मचारी के चेहरे पर चोट लगी है। अधिकारियों के अनुसार, दोनों छात्रों के बीच एक दिन पहले किसी बात को लेकर विवाद हुआ था।

अल्जीरिया ने यूएई से तोड़े राजनयिक संबंध

अल्जीरिया, एजेंसी। अल्जीरिया ने गुरुवार को संयुक्त अरब अमीरात से राजनयिक संबंध तोड़ दिए। अल्जीरियाई विदेश मंत्रालय ने कथित 'उकसाने वाली और शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों' तथा 'अनुचित व्यवहार' का हवाला दिया। संयुक्त अरब अमीरात ने इस फैसले को अस्थायी होने की उम्मीद जताई है।

मोहम्मद बिन सलमान चाहते थे अमेरिका करे हूतियों पर हमला, दो बार लगाया फोन पर नहीं मानें ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। इस साल 28 फरवरी को शुरू हुए पश्चिम एशिया में संघर्ष थमने का नाम नही ले रहा है। ईरान और अमेरिका-इस्राइल के बीच जारी युद्ध के अलावा अब सऊदी अरब और यमन के हूती विद्रोहियों के बीच भी तनाव बढ़ गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने अमेरिका से हूतियों के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करने की अपील की है। एक्सियोस की एक रिपोर्ट के अनुसार, मामले को लेकर सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से दो बार फोन पर बात की। उन्होंने ट्रंप से हूतियों के खिलाफ हमला करने का आग्रह किया। हूतियों ने लाल सागर के एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग को रोक रखा है।

अमेरिका-जापान-दक्षिण कोरिया की ड्रिल से भड़का उत्तर कोरिया! किम जोंग ने समुद्र में दाग दीं कई मिसाइलें

सियोल, एजेंसी। अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान की 5 दिवसीय सैन्य ड्रिल खत्म होते ही उत्तर कोरिया ने समुद्र की ओर कई कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें दाग दीं। दक्षिण कोरिया और उसके पड़ोसी देशों ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। उत्तर कोरिया इस सैन्य अभ्यास को अपने खिलाफ उकसावे की कार्रवाई मानता है। यह करीब 3 हफ्ते बाद उत्तर कोरिया का पहला बैलिस्टिक मिसाइल लॉन्च है। इससे पहले भी उत्तर कोरिया अमेरिका और दक्षिण कोरिया के सैन्य अभ्यासों का विरोध करते हुए मिसाइल परीक्षण कर चुका है।

वॉनसान इलाके से दागी गई मिसाइलें : दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के मुताबिक, उसने उत्तर कोरिया के पूर्वी तटीय इलाके वॉनसान से कई मिसाइलें दागे जाने का पता लगाया। मिसाइलों ने करीब 250 किलोमीटर की दूरी तय की और उत्तर कोरिया के पूर्वी समुद्री इलाके की ओर गईं। दक्षिण कोरियाई सेना ने अपनी निगरानी व्यवस्था बढ़ा दी है। साथ ही मिसाइल लॉन्च को लेकर अमेरिका और जापान के साथ लगातार जानकारी साझा की जा रही है। दक्षिण कोरिया की राष्ट्रपति राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने उत्तर कोरिया से बैलिस्टिक मिसाइलों की फायरिंग रोकने की अपील की है।

सैन्य अभ्यास को उत्तर कोरिया मानता है उकसावा : अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान ने शुक्रवार को अपना 5 दिवसीय 'फ्रीडम एज' सैन्य अभ्यास तय कार्यक्रम के मुताबिक खत्म किया। अमेरिकी पैसिफिक कमांड के मुताबिक, तीनों देशों की सेनाओं ने हवा, समुद्र और साइबर क्षेत्र में एक साथ अभ्यास किया। इसका मकसद आपसी तालमेल और संयुक्त सैन्य क्षमता को मजबूत करना था। अभ्यास में समुद्री युद्धाभ्यास, हवा में ईंधन भरने की ट्रेनिंग, साइबर समन्वय और मेडिकल ड्रिल जैसी गतिविधियां शामिल थीं। उत्तर कोरिया इसे अपनी सुरक्षा के लिए खतरा और संभावित हमले की तैयारी के तौर पर देखता है।

अमेरिका बोला, 'तत्काल कोई खतरा नहीं' : अमेरिकी पैसिफिक कमांड ने कहा कि उत्तर कोरिया की मिसाइल लॉन्चिंग से अमेरिकी क्षेत्र या उसके सहयोगियों के लिए तत्काल कोई खतरा नहीं है। कमांड ने कहा कि अमेरिका अपने देश और क्षेत्र में अपने सहयोगियों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। दक्षिण कोरियाई सेना ने पहले ही कहा था कि यह अभ्यास रक्षात्मक है और इसका मकसद उत्तर कोरिया के परमाणु खतरे की स्थिति में तीनों देशों की संयुक्त प्रतिक्रिया क्षमता बढ़ाना है, लेकिन उत्तर कोरिया ये बात नहीं मानता।

उत्तर कोरिया ने पहले ही दी थी धमकी : सोमवार को तीन देशों का सैन्य अभ्यास शुरू होने के कुछ घंटे बाद उत्तर कोरिया के रक्षा मंत्री किम सोंग गी ने इसकी आलोचना की थी। उन्होंने चेतावनी दी थी कि उत्तर कोरिया अपनी ताकत के आधार पर 'मजबूत और निर्णायक जवाबी कदम' उठाएगा। इसके बाद अब मिसाइल लॉन्च को उसी चेतावनी के जवाब में उठाए गए कदम के तौर पर देखा जा रहा है। इससे पहले उत्तर कोरिया की सेना ने अमेरिका-दक्षिण कोरिया के एक अन्य सैन्य अभ्यास के बाद करीब 10 कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलें समुद्र की ओर दागी थीं।

परमाणु ताकत बढ़ाने पर किम का जोर : उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन ने हाल ही में देश के दूसरे नौसैनिक विध्वंसक जहाज को सेवा में शामिल करने के कार्यक्रम में अधिक भरोसेमंद परमाणु प्रतिरोधक क्षमता बनाने की जरूरत बताई थी। उसके दोनों विध्वंसक जहाज परमाणु क्षमता वाली मिसाइलें ले जाने में सक्षम हैं। दूसरे विध्वंसक जहाज को पिछले साल लॉन्च करने की कोशिश के दौरान नुकसान पहुंचा था। मरम्मत के बाद उसे दोबारा लॉन्च किया गया। किम जोंग उन का पूरा फोकस अपने परमाणु हथियारों के जखीरे को बढ़ाने पर है।

ट्रंप के कदम के बाद भी नहीं माने किम : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले महीने पेंटागन को दक्षिण कोरिया के साथ होने वाले वार्षिक 'उल्ची फ्रीडम शील्ड' सैन्य अभ्यास को काफी कम करने का आदेश दिया था। ट्रंप ने इसके पीछे किम जोंग उन के साथ अपने अच्छे संबंधों का हवाला दिया था। उत्तर कोरिया इस सैन्य अभ्यास को अपने देश पर संभावित हमले की रिहर्सल मानता है। लेकिन किम जोंग उन की बहन और उत्तर कोरिया की वरिष्ठ अधिकारी किम यो जोंग ने ट्रंप के इस फैसले को भी खारिज कर दिया था।

रूस और चीन से बढ़ती नजदीकी भी अहम : विशेषज्ञों का मानना है कि उत्तर कोरिया अब अपने बढ़ते परमाणु कार्यक्रम और रूस तथा चीन के साथ मजबूत होते संबंधों के कारण पहले से ज्यादा आत्मविश्वास में है। जानकारों के मुताबिक, किम जोंग उन संभावित अमेरिका-उत्तर कोरिया बातचीत में अमेरिका से ज्यादा रियायतें हासिल करना चाहते हैं। किम जोंग उन ने इस साल की शुरुआत में कहा था कि अगर अमेरिका उत्तर कोरिया के खिलाफ अपनी 'शत्रुतापूर्ण नीति' छोड़ देता है और उत्तर कोरिया को परमाणु शक्ति के रूप में उसकी स्थिति का सम्मान करता है।

हूती विद्रोहियों ने बाब अल मंदब जल डमरू मध्य में मायून द्वीप पर कब्जा किया

अदन, एजेंसी। यमन के हूती विद्रोहियों ने शुक्रवार को बाब अल मंदब जलडमरूमध्य में रणनीतिक रूप से अहम मायून द्वीप पर कब्जा कर लिया। सिन्हुआ समाचार एजेंसी को सरकारी अधिकारी ने बताया कि सैनिकों के पीछे हटने के बाद हूती विद्रोहियों ने कार्रवाई की। नाम नहीं बताने की शर्त पर अधिकारी ने बताया कि हूती विद्रोही शुक्रवार तड़के कई नावों से द्वीप पर पहुंचे और बिना किसी सैन्य प्रतिरोध के उस पर कब्जा कर लिया। हूतियों ने पास के तट पर बख्तरबंद गाड़ियां और अन्य सैन्य उपकरण भी तैनात किए। अधिकारी ने बताया कि गुरुवार को लाल सागर के बंदरगाह शहर मोचा पर हूती विद्रोहियों के कब्जे के बाद सरकारी सैनिकों के दक्षिण की ओर पीछे हटने पर हूती विद्रोही जलडमरूमध्य के पास धुबाब जिले में भी आगे बढ़ गई है। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, मायून (जिसे पेरिम भी कहा जाता है) बाब अल मंदब के भीतर स्थित है और संकरे जलमार्ग को दो शिपिंग चैनलों में विभाजित करता है। यमन के पश्चिमी तट पर हूती विद्रोहियों की हालिया बढ़त के बाद इस पर कब्जा करने से समूह को लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्ग पर नजर रखने वाली प्रमुख जगहों पर नियंत्रण मिल गया है। हूती विद्रोहियों ने भीषण लड़ाई के बाद मोचा पर कब्जा किया और इसके रणनीतिक बंदरगाह, हवाई अड्डे और प्रमुख सरकारी सुविधाओं पर नियंत्रण कर लिया। पिछले सप्ताह एक बड़ा हमला शुरू करने के बाद से उन्होंने यमन के पश्चिमी तट पर तेजी से इलाकों पर कब्जा किया है। यमन और हॉर्न ऑफ अफ्रीका के बीच स्थित बाब अल मंदब अंतरराष्ट्रीय व्यापार और ऊर्जा शिपमेंट के लिए एक महत्वपूर्ण गलियारा है, जो लाल सागर और स्वेज नहर को अदन की खाड़ी और अरब सागर से जोड़ता है। यमन के लिए संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत हंस ग्रंडबर्ग ने गुरुवार को चेतावनी दी कि यमन में फिर से शुरू हुई लड़ाई से देश के एक बड़े और अनसुलझे क्षेत्रीय टकराव में घिरने का खतरा है, जिसके वैश्विक परिणाम हो सकते हैं। पिछले 24 घंटों में, यमन में कई मोर्चों पर लड़ाई तेज हो गई है, खासकर रणनीतिक पश्चिमी तट पर। ग्रंडबर्ग ने सुरक्षा परिषद को एक ब्रीफिंग में बताया कि हूती विद्रोहियों ने मोखा सहित कई जगहों पर बड़ा हमला किया। मोखा बंदरगाह शहर बाब अल मंदब से लगभग 75 किमी दूर स्थित है। बाब अल मंदब वह महत्वपूर्ण बिंदु है जो लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ता है उन्होंने कहा, 'उन्होंने मोखा पर नियंत्रण कर लिया है, जिससे दुनिया के सबसे अहम जलडमरूमध्य में से एक के रास्तों पर उनकी सीधी मौजूदगी हो गई है।

यूक्रेन पर रूस के हमले जारी, शॉपिंग मॉल के पास ड्रोन से किया हमला, पांच की मौत

कीव , एजेंसी। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने बताया कि रूस ने पावलोहराद में ड्रोन हमले कर कम से कम पांच लोगों की जान ले ली और 67 लोग घायल हो गए। यूक्रेनी मंत्री ने कहा कि शॉपिंग मॉल के पास दिनदहाड़े नागरिकों को निशाना बनाया गया, जो नागरिकों के खिलाफ जानबूझकर किया गया आतंक है। यूक्रेन के विदेश मंत्री एंड्री सिबिहा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पोस्ट पर लिखा, ''रूस ने पावलोहराद में ड्रोन हमले करके पांच लोगों की जान ले ली। हमलों में 67 लोग घायल हुए हैं। दिनदहाड़े ड्रोन हमलों में शॉपिंग मॉल के पास मौजूद आम नागरिकों को निशाना बनाया गया। इसे नागरिकों के खिलाफ जानबूझकर किया गया आतंक फैलाने वाला हमला बताया गया है।'' सिबिहा ने कहा कि रूस लगातार उन जगहों पर हमले कर रहा है, जहां उसे पता है कि लोग अपनी रोजमर्रा की जिंदगी के कामों में व्यस्त होंगे। इसका मकसद ज्यादा से ज्यादा लोगों को नुकसान पहुंचाना, डर फैलाना और यूक्रेनी समाज पर दबाव बनाना है। उन्होंने बताया कि पूरे यूक्रेन में हवाई हमलों की चेतावनियां लगातार जारी हैं। रूस लगातार बड़ी संख्या में ड्रोन लॉन्च कर रहा है और कुछ मामलों में तो सीधे उत्पादन केंद्रों से ही उन्हें भेजा जा रहा है।

उन्होंने आरोप लगाया कि मॉस्को ऐसा इसलिए कर पा रहा है क्योंकि उसके पास अभी भी मिसाइलें, ड्रोन, उनके पुर्जे, पर्याप्त धन और बिना किसी डर के कार्रवाई करने की क्षमता मौजूद है। सिबिहा ने इस रणनीति को दबाव बनाने की नीति बताया। रूस का मानना है कि नागरिक क्षेत्रों पर लगातार हमले करके यूक्रेन के लोगों को थकाया जा सकता है और यूक्रेन को समझौते करने के लिए मजबूर किया जा सकता है। सिबिहा ने कहा कि यूक्रेन को तुरंत अतिरिक्त एयर डिफेंस सिस्टम और उन्हें चलाने के लिए जरूरी इंटरसेप्टर मिसाइलों की जरूरत है। साथ ही रूस के हथियार निर्माण उद्योग और उसे चलाने वाली आपूर्ति श्रृंखलाओं (सप्लाई चेन) पर और सख्त प्रतिबंध लगाए जाने चाहिए।

बघाई ने पीट हेगसेथ के बयान पर बोला हमला, कहा- 9/11 की आड़ में ईरान के खिलाफ जंग को सही ठहरा रहा अमेरिका

वाशिंगटन , एजेंसी। ईरानी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने वाशिंगटन के रुख पर कड़ा एतराज जताते हुए अमेरिका पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि अमेरिकी सरकार 9/11 वर्ल्ड ट्रेड सेंटर हमलों की 25वीं बरसी का इस्तेमाल ईरान के खिलाफ एक 'लापरवाह और गैर-कानूनी युद्ध' को सही ठहराने के लिए कर रही है। बघाई ने अमेरिकी युद्ध सचिव पीट हेगसेथ के उस बयान की कड़ी निंदा की, जो उन्होंने 9/11 के एक स्मृति समारोह के दौरान दिया था। ईरानी प्रवक्ता ने अमेरिकी विदेश नीति के बुनियादी अंतर्विरोधों पर सवाल उठाते हुए आतंकवाद की परिभाषा तय करने के वाशिंगटन के 'अकेले अधिकार' को खारिज कर दिया।

इस्माइल बघाई ने क्या कहाः बघाई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि 9/11 हमले के जिम्मेदार लोग ईरानी नहीं थे। उन्होंने अमेरिका की आतंकवाद के खिलाफ नीति पर सवाल उठाते हुए कहा कि अमेरिका खुद दूसरे देशों में सैन्य कार्रवाई करता है, अधिकारियों की हत्या करता है और आम नागरिकों को निशाना बनाता है, फिर भी आतंकवाद की परिभाषा तय करने का अधिकार अपने पास रखता है। ऐतिहासिक दावों का खंडन करते हुए बघाई ने स्पष्ट किया कि 2001 के हमलों में ईरान की कोई भूमिका नहीं थी। उन्होंने कहा कि 9/11 के हमलावर ईरानी नहीं थे, बल्कि ये वही लोग थे जिन्हें पिछले दशकों में खुद अमेरिका ने हथियार दिए, संगठित किया और तैयार किया था।

बघाई ने कहा कि 9/11 के बाद अमेरिका के तथाकथित 'आतंक के खिलाफ युद्ध' ने इराक और अफगानिस्तान में केवल दशकों का कब्जा, विनाश और निर्दोष नागरिकों की मौतें दीं। उन्होंने हेगसेथ के इस रुख को पूरी तरह बेतुका बताते हुए कहा कि किसी संप्रभु देश के अधिकारियों की हत्या करने और महिलाओं व बच्चों सहित आम नागरिकों को निशाना बनाने वाले आपराधिक युद्ध को आतंकवाद-निरोध के नाम पर नैतिक रूप से सही नहीं ठहराया जा सकता। बघाई ने अमेरिकी नीति का मजाक उड़ाने के लिए फिल्म 'डेस्पिकेबल मी' का लोकप्रिय 'ग्रूज प्लान' मीम भी साझा किया। दूसरी तरफ, अमेरिकी युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने अपने आक्रामक भाषण में ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई को अमेरिका के आतंकवाद-विरोधी अभियान से जोड़ा था। हेगसेथ ने दावा किया कि पिछले छह महीनों में अमेरिकी सैनिकों ने आतंकवाद के सबसे बड़े प्रायोजक को तहस-नहस कर दिया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने ईरानी नेताओं को मार गिराया है, उनकी वायुसेना को तबाह किया है और उनकी नौसेना व तेल टैंकरों को समुद्र में डुबो दिया है। हेगसेथ ने जोर देकर कहा कि अमेरिका जलडमरूमध्य पर नियंत्रण रखता है, आर्थिक दबाव बढ़ा रहा है और ईरान को कभी परमाणु हथियार नहीं बनाने देगा। उन्होंने बाइबिल के वचनों और फ्लाइट 93 के यात्री टॉड बीमर के प्रसिद्ध शब्दों 'लेट्स रोल' का हवाला देते हुए इस लड़ाई को खत्म करने का संकल्प जताया।

अमेरिका: अलास्का के ठंडे समुद्र में पलटी नाव पर दो दिन चिपका रहा 15 साल का किशोर; कैसे बची जान? भाई की मौत

अलास्का, एजेंसी। अलास्का के ठंडे बेरिंग सागर में 15 साल का एक लड़का करीब दो दिन तक पलटी हुई छोटी नाव के ऊपर चिपका रहा। बाद में मछली पकड़ने वाली एक नाव ने उसे बचा लिया। उसके साथ मछली पकड़ने गए बड़े भाई और एक रिश्तेदार की जान नहीं बच सकी।

किशोर ने बचाव दल के एक सदस्य को बताया कि वह और उसका रिश्तेदार कुछ समय तक पलटी नाव को पकड़े रहे। इसके बाद उसका रिश्तेदार पानी में फिसलकर गिर गया। बाद में किशोर के भाई और रिश्तेदार दोनों के शव बरामद कर लिए गए।

उसे रूस के ज्यादा करीब स्थित सेंट लॉरेंस द्वीप के पास समुद्र से बचाया गया। यह अलास्का का एक दूरदराज द्वीप है। यह अमेरिका की मुख्य भूमि के मुकाबले रूस के ज्यादा करीब है। मछली पकड़ने वाली नाव द नॉर्थवेस्ट एक्सप्लोरर के कप्तान एडम व्हाइट ने बताया कि किशोर अंधेरे में भी नाव से चिपका रहा। समुद्र के पानी का तापमान करीब 10 डिग्री सेल्सियस था। कप्तान ने उसकी हिम्मत की तारीफ करते हुए कहा कि वह बहुत मजबूत बच्चा है। उन्होंने बताया कि किशोर के दांत ठंड से कांप रहे थे। उसने बताया कि उसका भाई अभी भी नाव के नीचे है। उसने यह भी बताया कि बचाव से पिछली रात उसका रिश्तेदार पानी में गिर गया था। अमेरिकी तटरक्षक बल ने सोमवार सुबह तलाश शुरू की। परिवार के लोगों ने रविवार रात तीनों के लापता होने की सूचना दी थी। तीनों शुक्रवार को सेंट लॉरेंस द्वीप के सावूंगा गांव से निकले थे। उन्हें रविवार सुबह वापस लौटना था। सावूंगा गांव में हैलिबट मछली पकड़ना जीवन और संस्कृति का अहम हिस्सा है। गांव में करीब 800 लोग रहते हैं। यहां रोजगार के मौके भी कम हैं। किशोर की मौसी कोलन वॉकर ने बताया कि लोग अक्सर पकड़ी गई मछलियां परिवार और पड़ोसियों के साथ बांटते हैं।

नेपाल भीषण बाढ़ और प्राकृतिक आपदा: जलवायु परिवर्तन से क्षति के मुआवजे का उठता सवाल

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की धरती पर हाल ही में आई भीषण बाढ़ और प्राकृतिक आपदा ने पूरी दुनिया को झकझोर कर रख दिया है. जब एक हिमालयी देश अपनी उजड़ी हुई बस्तियों, टूटे हुए पुलों और तबाह हुई अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने मुआवजे की मांग रखता है, तो यह केवल एक देश की पुकार नहीं रह जाती, बल्कि यह ग्लोबल साउथ की उस लंबी फेहरिस्त की आवाज बन जाती है जो बिना किसी गलती के ग्लोबल वार्मिंग की सबसे भारी कीमत चुका रहा है. नेपाल जैसे देशों ने कभी बड़े पैमाने पर कार्बन का उत्सर्जन नहीं किया, उनके यहां उद्योग-धंधे वह प्रदूषण नहीं फैलाते जो पश्चिमी या विकसित देशों में दशकों से चले आ रहे हैं, फिर भी प्रकृति के इस कहर का सबसे बड़ा दंश उन्हें ही झेलना पड़ रहा है. नेपाल की यह मुखर मांग अब पूरी दुनिया के सामने यह सवाल खड़ा करती है कि आखिर इस तबाही का जिम्मेदार कौन है और क्या पीड़ित देशों को उनके नुकसान का हक मिलना चाहिए या नहीं. जलवायु परिवर्तन का संकट अब भविष्य की कोई काल्पनिक चेतावनी नहीं, बल्कि हमारे वर्तमान का एक खौफनाक सच बन चुका है. वैज्ञानिक आंकड़े बताते हैं कि पृथ्वी का औसत तापमान पूर्व-औद्योगिक स्तर से लगातार ऊपर जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप महासागर गर्म हो रहे हैं, मौसम का चक्र पूरी तरह बिगड़ चुका है और अति-वृष्टि, सूखा, चक्रवात तथा बादलों के फटने की घटनाएं आम हो गई हैं. दुनिया भर में जलवायु आपदाओं के कारण हर साल सैकड़ों अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान हो रहा है. और विकासशील देशों में यह नुकसान उनकी कुल राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा निगल जाता है. विश्व बैंक और अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें बताती हैं कि यदि तुरंत ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले दशकों में करोड़ों लोगों को अपने घर-बार छोड़कर जलवायु शरणार्थी बनने पर मजबूर होना पड़ेगा. यह केवल आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि इसमें उजड़ते हुए खेत, टूटते हुए मकान और उन अनगिनत इंसानों के आंसू हैं जिन्होंने अपनी मेहनत से अपनी दुनिया बनाई थी और एक झटके में सबकुछ खो दिया. इस पूरे संकट के केंद्र में एक बहुत बड़ा पाखंड छिपा हुआ है, जिसे अब और नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. ऐतिहासिक रूप से जिन विकसित देशों ने अपने कारखानों और आधुनिक जीवनशैली से इस धरती के पर्यावरण को सबसे ज्यादा प्रदूषित किया, वे आज जब विकासशील देशों को मदद देने की बात आती है, तो अपने हाथ पीछे खींच लेते हैं. वे इसे दान या सहायता का नाम देते हैं, जबकि पर्यावरण और अर्थशास्त्र के जानकारों के अनुसार यह किसी भी सूरत में दान नहीं, बल्कि ऐतिहासिक कर्ज और मुआवजे की अदायगी है. जिन देशों ने सदियों तक पर्यावरण की कीमत पर अपनी तिजोरियां भरी हैं, उनकी नैतिक और विधिक जिम्मेदारी बनती है कि वे उन देशों को आर्थिक संबल दें जो उनके किए गए प्रदूषण की भारी कीमत चुका रहे हैं. एशिया और अफ्रीका के कई ऐसे देश हैं जो लगातार सूखे, चक्रवातों और बाढ़ की चपेट में आ रहे हैं, उनकी कृषि व्यवस्था बर्बाद हो रही है।

अमेरिकी मीडिया की नजर में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में बदलता समीकरण

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के प्रमुख अखबारों ने नई दिल्ली में हो रहे ब्रिक्स शिखर सम्मेलन को बदलते वैश्विक हालात की झलक के तौर पर देखा है। ये हालात तनावपूर्ण गठबंधनों, क्षेत्रीय युद्धों और वॉशिंगटन व बीजिंग के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा से तय हो रहे हैं। 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने एक खबर में कहा कि इस शिखर सम्मेलन में सबसे अहम सवाल यह है कि क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग में से कौन विकासशील दुनिया की अधिक प्रभावशाली आवाज बनकर उभरेगा। चीन ब्रिक्स को अमेरिकी ताकत को चुनौती देने के एक प्लेटफॉर्म के तौर पर देखता है। वहीं, भारत चाहता है कि यह ग्रुप इतना बड़ा और खुला रहे कि देशों को अलग-अलग गुटों में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर न होना पड़े। अखबार ने कहा कि युद्ध, ऊर्जा की बढ़ती कीमतें, अमेरिकी टैरिफ और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लेकर चिंताएं देशों को वॉशिंगटन और बीजिंग के साथ अपने रिश्तों पर फिर से सोचने के लिए मजबूर कर रही हैं। वॉशिंगटन में स्टिमसन सेंटर के चीन प्रोग्राम की डायरेक्टर युन सन ने 'टाइम्स' को बताया, 'भारत को लेकर चीन की मुख्य चिंता हमेशा से भारत का अमेरिका के साथ झुकाव रही है। इसलिए बीजिंग निश्चित रूप से दिल्ली के साथ अपने रिश्तों को बेहतर बनाने का मौका नहीं गंवाना चाहेगा।

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग का यह दौरा सात साल में भारत का उनका पहला दौरा है। यह दौरा 2020 में सीमा पर हुई जानलेवा झड़प के बाद रिश्तों में आई लंबी खटास और 2024 में शुरू हुई सावधानी भरी कूटनीतिक सुधार की प्रक्रिया के बाद हो रहा है। शी 24 सितंबर को व्हाइट हाउस में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मिलने वाले हैं। यह मुलाकात नई दिल्ली समिट को और भी अहम बनाती है, क्योंकि चीनी नेता अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ बेहद अहम बातचीत की तैयारी कर रहे हैं।

वॉल स्ट्रीट जर्नल ने कहा कि अमेरिका के साथ भारत और चीन के रिश्तों में अनिश्चितता ने इन दोनों परमाणु-हथियार वाले पड़ोसी देशों के लिए तनाव कम करने का मौका दिया है। तृप्ति लाहिड़ी और ऑस्टिन रैमजी की रिपोर्ट में कहा गया है कि ट्रंप के दूसरे कार्यकाल के दौरान भारत-अमेरिका संबंधों में गिरावट आई थी, जिसकी वजह नई दिल्ली द्वारा रूसी तेल की खरीद जैसे मुद्दे थे। नई दिल्ली की जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी में चीनी अध्ययन के प्रोफेसर श्रीकांत कोंडापल्ली ने जर्नल को बताया, 'भारत स्थिति को फिर से संतुलित करने की कोशिश कर रहा है। अखबार ने कहा कि भारत-चीन संबंधों में कोई भी सुधार सीमा विवाद के अनसुलझे रहने, पाकिस्तान के साथ चीन के करीबी रिश्तों और हिंद महासागर में सुरक्षा प्रतिस्पर्धा की वजह से सीमित है। सुन ने जर्नल को बताया, 'चीनी पक्ष भी देख रहा है कि भारत सही समय का इंतजार कर रहा है और बेहतर विकल्पों पर काम कर रहा है, जो भविष्य में सामने आ सकते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि इससे चीन-भारत संबंधों में मौजूदा सुधार की सतही प्रकृति और बढ़ जाती है। वाशिंगटन पोस्ट ने एसोसिएटेड प्रेस के पत्रकारों एजाज हुसैन और शेख सालिक की रिपोर्टें प्रकाशित कीं, जिनमें इस शिखर सम्मेलन को भारत के लिए एक मुश्किल संतुलन बनाने वाली कवायद बताया गया। रिपोर्टों में कहा गया कि बैठक में शामिल होने वाले नेताओं में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, ईरानी राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियान और शी शामिल थे। पीएम मोदी ने शिखर सम्मेलन से पहले पुतिन और पेजेश्कियान के साथ अलग-अलग बातचीत की। वाशिंगटन 'पोस्ट' में छपी एपी की रिपोर्ट के अनुसार, इस बढ़े हुए ग्रुप के 11 सदस्य ग्लोबल ऑर्डर में अधिक प्रभाव चाहते हैं, लेकिन उनके राजनीतिक, आर्थिक और विदेश नीति से जुड़े हित अलग-अलग हैं। इंटरनेशनल क्राइसिस ग्रुप के सीनियर एनालिस्ट प्रवीण डोंथी ने एपी को बताया, 'ग्लोबल साउथ कोई एक जैसा ग्रुप नहीं है। इसलिए, इस ग्रुप के लिए इन झगड़ों को संभालना और उनमें मध्यस्थता करना मुश्किल होगा।' रिपोर्ट में कहा गया है कि यूक्रेन और मिडिल ईस्ट में चल रहे युद्ध इन मतभेदों को सामने ला सकते हैं। भारत के रूस और ईरान के साथ पुराने संबंध हैं, जबकि वह अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ भी अपनी साझेदारी बढ़ा रहा है।

गणेशोत्सव

विनायक चतुर्थी का पर्व भगवान गणेश को समर्पित है। यह पर्व हिन्दू धर्म के मानने वालों का मुख्य पर्व है। विनायक चतुर्थी को गणेशोत्सव के रूप में सारे विश्व में हर्षोल्लास व श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। भारत में इसकी धूम यूं तो सभी प्रदेशों में होती है, परन्तु विशेष रूप से यह महाराष्ट्र में मनाया जाता है।

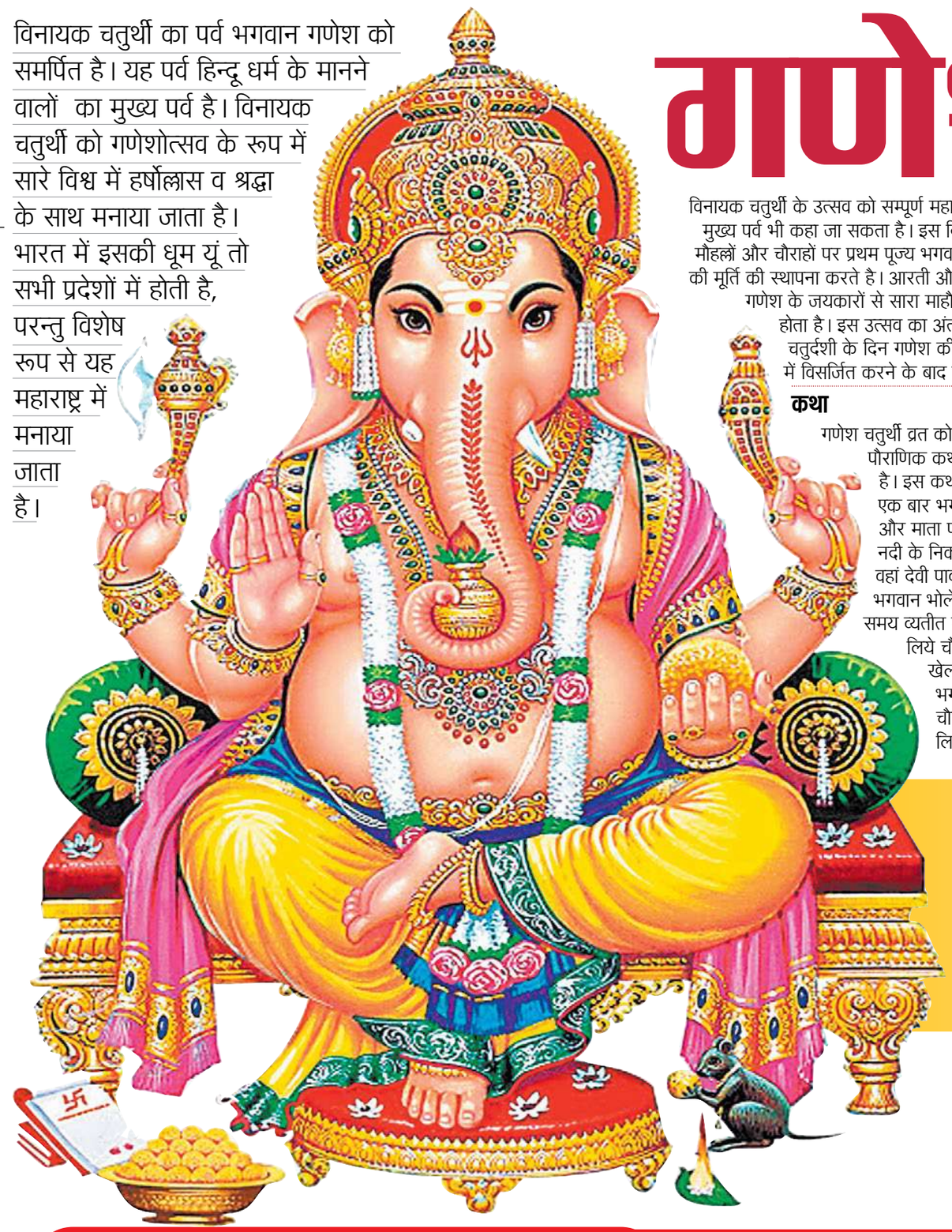

विनायक चतुर्थी के उत्सव को सम्पूर्ण महाराष्ट्र का मुख्य पर्व भी कहा जा सकता है। इस दिन लोग मौहल्लों और चौराहों पर प्रथम पूज्य भगवान गणेशजी की मूर्ति की स्थापना करते है। आरती और भगवान श्री गणेश के जयकारों से सारा माहौल गुंज रहा होता है। इस उत्सव का अंत अनंत चतुर्दशी के दिन गणेश की मूर्ति समुद्र में विसर्जित करने के बाद होता है।

कथा

गणेश चतुर्थी व्रत को लेकर एक पौराणिक कथा प्रचलन में है। इस कथा के अनुसार एक बार भगवान शंकर और माता पार्वती नर्मदा नदी के निकट बैठे थे। वहां देवी पार्वती ने भगवान भोलेनाथ से समय व्यतीत करने के लिये चौपड़ का खेल खेलने को कहा। भगवान शंकर चौपड़ खेलने के लिये तैयार तो हो गये, परन्तु इस खेल मे हार-जीत का फैसला कौन करेगा? इसका प्रश्न उठा, इसके जवाब में भगवान भोलेनाथ ने कुछ तिनके एकत्रित कर उसका पुतला बनाकर, उस पुतले की प्राण प्रतिष्ठा कर दी और पुतले से कहा कि- 卐बेटा हम चौपड़ खेलना चाहते है, परन्तु हमारी हार-जीत का फैसला करने वाला कोई नहीं है। इसलिये तुम बताना की हम में से कौन हारा और कौन जीता।

चौपड़ का खेल

यह कहने के बाद चौपड़ का खेल प्रारम्भ हो गया। खेल तीन बार खेला गया, और संयोग से तीनों बार पार्वती जी जीत गईं। खेल के समाप्त होने पर बालक से हार-जीत का फैसला करने के लिये कहा गया, तो बालक ने महादेव को विजयी बताया। यह सुनकर माता पार्वती क्रोधित हो गईं और उन्होंने क्रोध में आकर बालक को लंगडा होने व कीचड़ में पड़े रहने का श्राप दे दिया। बालक ने माता से माफ़ी मांगी और कहा- मुझसे अज्ञानता वश ऐसा हुआ, मैनें किसी द्वेष में ऐसा नहीं किया।卐 बालक के क्षमा मांगने पर माता ने कहा- यहाँ गणेश पूजन के लिये नाग कन्याएं आयेंगी, उनके कहे अनुसार तुम गणेश व्रत करो, ऐसा करने से तुम मुझे प्राप्त करोगे। यह कहकर माता पार्वती भगवान शिव के साथ कैलाश पर्वत पर चली गई।

गणेश का प्रसन्न होना

ठीक एक वर्ष बाद उस स्थान पर नाग कन्याएं आईं। नाग कन्याओं से श्री गणेश के व्रत की विधि मालुम करने पर उस बालक ने 21 दिन लगातार गणेश जी का व्रत किया। उसकी श्रद्धा देखकर भगवान गणेश प्रसन्न हो गए और उन्होंने बालक को मनोवांछित फल मांगने के लिये कहा। बालक ने कहा- हे विनायक! मुझमें इतनी शक्ति दीजिए, कि मैं अपने पैरों से चलकर अपने माता-पिता के साथ कैलाश पर्वत पर पहुंच सकूं और वो यह देख प्रसन्न हों।卐 बालक को यह वरदान देकर भगवान गणेश अन्तर्धान हो गए। बालक इसके बाद कैलाश पर्वत पर पहुंच गया और वहाँ पहुंचने की कथा उसने भगवान महादेव को सुनाई। उस दिन से पार्वती जी शिवजी से विमुख हो गईं। देवी के रुष्ट होने पर भगवान शंकर ने भी बालक के बताये अनुसार गणेश का व्रत 21 दिनों तक किया। इसके प्रभाव से माता के मन से भगवान भोलेनाथ के लिये जो नाराजगी थी, वह समाप्त हो गई।

भगवान गणेशजी ही प्रथम पूज्य क्यों?

एक बार कार्तिकेय व गणेशजी में होड़ लगी कि सबसे बुद्धिमान कौन? तब भगवान भोलेनाथ जी ने कहा जो पृथ्वी के सात चक्कर लगाकर सबसे पहले लौट कर आएगा वह बुद्धिमान व प्रथम पूजनीय होगा। गणेशजी भारी भरकम थे। वाहन भी चूहा व कार्तिकेय उत्तम वजन के थे और उनका वाहन मोर। स्वामी कार्तिकेय चल पड़े। गणेशजी सोचने लगे। गणेशजी ने सोचा माता-पिता ही जन्मदाता है तो सबसे महान वही हुए। उन्हीं के सात चक्कर लगा लिए और खड़े हो गए।

कार्तिकेय भी आ पहुंचे। जब निर्णय की बारी आई तो भगवान आशुतोषजी ने कहा कि गणेश बुद्धिमान व श्रेष्ठ हैं, क्योंकि माता-पिता ही समस्त तीर्थों से बड़े होते हैं। तभी से भगवान गणेशजी को सब देवताओं से पहले पूजा जाता है एवं हर मांगलिक कार्य में श्रीगणेश जी का ही पूजन स्मरण व स्थापना की जाती है। इससे हमें सीख मिलती है कि जो अपने माता-पिता की सेवा करता है, उन्हें सब तीर्थों का फल मिल जाता है। फिर वह तीर्थयात्रा करें या ना करें।

हर बाधा दूर करते हैं श्रीगणेश

प्राचीन समय में हल्दी को गणेश जी की मूर्ति के रूप में पूजा जाता था। हल्दी को मंगलकारी, धन व ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। जिस देवता की स्तुति इन शब्दों से की जाती हो, ऐसे पूजनीय रिद्धि-सिद्धि के स्वामी विघ्नहर्ता के जप में हर शुभ मांगलिक कार्य व पूजन में सर्वप्रथम पूजे जाने वाले भालचंद्र यानी श्रीगणेश जी वैवाहिक कार्यों में भी सर्वप्रथम न सिर्फ पूजनीय हैं, अपितु वैवाहिक निमंत्रणों में निमंत्रित किए जाने वाले प्रथम अतिथि भी हैं। समस्त मांगलिक कार्यों में प्रथम पूजनीय होने व हर विघ्न और कष्ट को दूर करने की उनकी महत्ता के कारण ही मंगलमूर्ति भी कहे जाते हैं।

यह माना जाता है कि श्रीगणेश जी समस्त दिशाओं में उपस्थित हैं एवं उनके पूजन के साथ शुरू किया गया कोई भी कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण होता है। अतः सबसे पहले उनकी स्तुति व पूजन कर कार्य शुरू किए जाते हैं। चाहे वैवाहिक कार्यक्रम हो अथवा गृह प्रवेश सभी में श्रीगणेश जी को याद किया जाता है। यहां तक कि वैवाहिक व अन्य मांगलिक कार्यों के विभिन्न चित्र सर्वप्रथम अंकित किए जाते हैं अथवा उनकी स्तुति से निमंत्रण-पत्र का आरंभ होता है। हमारे समाज में प्राचीन समय से यह मान्यता रही है कि श्रीगणेश जी के पूजन से शुरू किए गए कार्य में कभी कोई बाधा नहीं आती और कार्य निर्विघ्न रूप से संपन्न होता है। श्रीगणेश को समस्त गणों का अधिपति माना जाता है और इसी वजह से वे गणपति के नाम से भी जाने जाते हैं।

गणेश जी के मांगलिक कार्यों में प्रथम पूजन को लेकर यह कथा प्रचलित है कि एक बार समस्त देवी-देवताओं को पृथ्वी का चक्कर लगाने को कहा गया, किंतु श्रीगणेश जी अपने भारी शरीर व छोटे से वाहन मूषक के कारण दुविधा में थे कि वे चक्कर कैसे पूर्ण करें। उन्होंने अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए माता-पिता पार्वती व शिवजी की परिक्रमा कर ली और सभी के पूछने पर कारण बताया कि माता-पिता तो समस्त संसार के तुल्य हैं। वे ब्रह्मा के सहायक हैं, अतः उनकी पूजा का विशेष महत्व है। प्राचीन समय में हल्दी को गणेश जी को मूर्ति स्वरूप पूजा जाता था। गणेश जी की उपस्थिति ओंमकार में मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि गणेश जी के शुभागमन के साथ सारी बाधाएं खुद-ब-खुद खत्म हो जाती हैं। श्रीगणेश जी सभी का कल्याण करने वाले माने जाते हैं।

श्री गणेश पूजन की आसान विधि

श्रीगणेश पूजा अपने आपमें बहुत ही महत्वपूर्ण व कल्याणकारी है। चाहे वह किसी कार्य की सफलता के लिए हो या फिर चाहे किसी कामनापूर्ति स्त्री, पुत्र, पौत्र, धन, समृद्धि के लिए या फिर अचानक ही किसी संकट मे पड़े हुए दुखों के निवारण हेतु हो।

- अर्थात जब कभी किसी व्यक्ति को किसी अनिष्ट की आशंका हो या उसे नाना प्रकार के शारीरिक या आर्थिक कष्ट उठाने पड़ रहे हो तो उसे श्रद्धा एवं विश्वासपूर्वक किसी योग्य व विद्वान ब्राह्मण के सहयोग से श्रीगणपति प्रभु व शिव परिवार का व्रत, आराधना व पूजन करना चाहिए।

- पूजन से पहले नित्यादि क्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध आसन में बैठकर सभी पूजन सामग्री को एकत्रित कर पुष्प, धूप, दीप, कपूर, रोली, मौली लाल, चंदन, मोदक आदि एकत्रित कर क्रमशः पूजा करें।
- भगवान श्रीगणेश को तुलसी दल व तुलसी पत्र नहीं चढ़ाना चाहिए। उन्हें, शुद्ध स्थान से चुनी हुई दुर्वा को धोकर ही चढ़ाना चाहिए।
- श्रीगणेश भगवान को मोदक (लड्डू) अधिक प्रिय होते हैं इसलिए उन्हें देशी घी से बने मोदक का प्रसाद भी चढ़ाना चाहिए।
- श्रीगणेश स्त्रोत से विशेष फल की प्राप्ति होती है।
- श्रीगणेश सहित प्रभु शिव व गौरी, नन्दी, कार्तिकेय सहित सम्पूर्ण शिव परिवार की पूजा षोड़षोपचार विधि से करना चाहिए।
- व्रत व पूजा के समय किसी प्रकार का क्रोध व गुस्सा न करें। यह हानिप्रद सिद्ध हो सकता है।
- श्रीगणेश का ध्यान करते हुए शुद्ध व सात्विक चित से प्रसन्न रहना चाहिए।
- शास्त्रानुसार श्रीगणेश की पार्थिव प्रतिमा बनाकर उसे प्राणप्रति?ष्ठित कर पूजन-अर्चन के बाद विसर्जित कर देने का आख्यान मिलता है। किन्तु भजन-कीर्तन आदि आयोजनों और सांस्कृतिक आयोजनों के कारण भक्त 1, 2, 3, 5, 7, 10 आदि दिनों तक पूजन अर्चन करते हुए प्रतिमा का विसर्जन करते हैं।
- किसी भी पूजा के उपरांत सभी आवाहित देवताओं की शास्त्रीय विधि से पूजा-अर्चना करने के बाद उनका विसर्जन किया जाता है, किन्तु श्री लक्ष्मी और श्रीगणेश का विसर्जन नहीं किया जाता है। इसलिए श्रीगणेश जी की प्रतिमा का विसर्जन करें, किन्तु उन्हें अपने निवास स्थान में श्री लक्ष्मी जी सहित रहने के लिए निमंत्रित करें।
- पूजा के उपरांत अपराध क्षमा प्रार्थना करें, सभी अतिथि व भक्तों का यथा व्यवहार स्वागत करें।
- पूजा कराने वाले ब्राह्मण को संतुष्ट कर यथा विधि पारिश्रामिक (दान) आदि दें, उन्हें प्रणाम कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर दीर्घायु, आरोग्यता, सुख, समृद्धि, धन-ऐश्वर्य आदि को बढ़ाने के योग्य बनें।

भारतीय धर्म संस्कृति में किसी कार्य की सफलता हेतु पहले मंगलाचरण या फिर पूज्य देवों के वंदना की परंपरा रही है। किसी कार्य को सुचारू रूप से निर्विघ्नपूर्वक संपन्न करने हेतु सर्वप्रथम श्रीगणेश जी की वंदना व अर्चना का विधान है। इसीलिए सनातन धर्म में सर्वप्रथम श्रीगणेश की पूजा से ही किसी कार्य की शुरुआत होती है। जो भी भक्त भगवान गणेश का व्रत या पूजा करता है उसे श्रीगणेश प्रभु की कृपा और मनोवांछित फल की प्राप्ति अवश्य ही होती है।

श्री गणेश एक रूप अनेक

गणेश शब्द की व्युत्पति हुई है गणानां जीवजातानां यः ईशः स्वामी सः गणेशः से। अर्थात,जो समस्त जीव जाति के ईश-स्वामी हैं वह गणेश हैं। इनकी पूजा से सभी विघ्न नष्ट होते हैं। लेकिन अन्य देवताओं की तरह गणेश जी के भी कई रूप हैं।

गणेश पुराण के क्रीड़ा खंड में युग-भेद से गणेश जी के चार रूपों की व्याख्या करके उनके चार भिन्न वाहन बताए गए हैं।

सतयुग में गणेश जी का वाहन सिंह है, वे दस भुजा वाले हैं और उनका नाम विनायक है।

त्रेता युग में वाहन मोर है, छः भुजाएं हैं और नाम मयूरेश्वर है।

द्वापर में वाहन चूहा (मूषक) है, भुजाएं चार हैं और नाम गजानन है।

कलयुग में दो भुजाएं हैं वाहन घोड़ा है और नाम धूम्रकेतु है।

इन चारों रूपों की उपासना विधि व लीला चरित्र का विवरण गणेश पुराण में प्राप्त होता है।

वर्तमान में गणेश जी का सर्वप्रसिद्ध वाहन मूषक(चूहा)माना जाता है। विभिन्न मंत्रों के ध्यान में इनके मूषक वाहन का ही संकेत पाया जाता है।

विशिष्ट वस्तुओं के पूजन भेद से गणेश जी के अनेक रूप प्रसिद्ध हैं जैसे हरिद्रा गणेश,दूर्वा गणेश,शमी गणेश,गोमेद गणेश आदि।

कामना भेद से भी इनके भिन्न रूपों की उपासना की जाती है जैसे संतान प्राप्ति हेतु संतान गणपति,विद्या प्राप्ति हेतु विद्या गणपति आदि।

सामान्य उपासक दैनिक उपासना में गणेश जी के प्रसिद्ध द्वादश नाम स्तोत्र,संकट नाशक स्तोत्र,गणपति अथर्वशीर्ष,गणेश कवच,शतनामस्तोत्र आदि का सुविधानुसार पाठ करके इनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं।

विशिष्ट उपासना के अंतर्गत गणपति अथर्वशीर्ष से इनका अभिषेक किया जाता है। गणेश पुराण एवं रुद्रयामल तंत्र में वर्णित सहस्र नामस्तोत्र की नामावली के द्वारा दूर्वा से इनका अर्चन किया जाता है। गणपति योग भी वैदिक पद्धति के द्वारा संपन्न कराया जाता है।

अलग-अलग होती है उपासना-

भगवान गणेश की उपासना अनेक प्रकार से होती है। गणेशमूर्ति के अलग-अलग प्रकार की अर्चना का विधान भी अलग-अलग होता है। दो से अठारह भुजा एवं एकमुखी से दशमुखी मूर्तियों का पूजन होता है और इनसे संबंधित मंत्र,कवच,यंत्र,स्त्रोत आदि का विधान तंत्र शास्त्र के मान्य ग्रंथों,मंत्र महार्णव,मंत्रमहोदधि,शारदा तिलक,तंत्र सार आदि में अंतर पाया जाता है। गणपति पूजन में मुख्यतः दूर्वा,शमी के पत्ते और मोदक (लड्डू)अर्पित किए जाते हैं।

बेबी और नाम शबाना के बाद खूब एक्शन रोल ऑफर हुए लेकिन...

दमदार अभिनय और बेबाक व्यक्तित्व के लिए जानी जाने वाली अदाकारा तापसी पन्नू अब अपनी नई फिल्म 'गांधारी' में भी बेटी को तलाशती नेत्रहीन मां की मजबूत भूमिका में नजर आ रही हैं। खास बात यह है कि करियर के शुरुआती दौर में बेबी और नाम शबाना जैसी फिल्मों में ऐक्शन के लिए तारीफें बटोरने वाली तापसी इसमें लंबे अरसे बाद ऐक्शन भी करती दिख रही हैं। तापसी बताती हैं कि वह इस जॉनर से इसलिए दूर थीं, क्योंकि एक तो वह ऐक्शन करके शारीरिक-मानसिक रूप से थक गई थीं, दूसरे अलग तरह के इमोशंस भी एक्सप्लोर करना चाहती थीं।

एजेंट-कॉप के कई ऐक्शन रोल मना किए

बकौल तापसी, 'बेबी और नाम शबाना को जिस तरह का प्यार मिला, मेरे लिए वैसे ही रोल करना बहुत काफी लुभावना था, क्योंकि तब ज्यादा लोग ऐक्शन कर भी नहीं रहे थे। मुझे अंडर कवर एजेंट, कॉप, मिशन वाले ऐक्शन रोल ऑफर भी खूब हुए, लेकिन मुझे वो सब नहीं करना था, क्योंकि मैं बहुत थक गई थी। उन फिल्मों में सारा ऐक्शन मैंने खुद किया था। उसमें कोई इफेक्ट नहीं था, तो वो फिजिकली-मेंटली बहुत मेहनत का काम है। फिर, मैं वायलेंट इंसान भी नहीं हूं। मैं मारपीट देखकर घबरा जाती हूं। लोगों को ऐसा लगता नहीं है लेकिन ऐसा है। इसलिए भी मुझे उससे ब्रेक चाहिए था। साथ ही, मुझे बाकी इमोशंस को एक्सप्लोर करने वाले काफी अच्छे रोल भी मिल रहे थे, तो मैंने सोचा अब ऐक्शन तभी करूंगी, जब इससे ऊपर का कुछ होगा।'

हम हीरोइनों की जीत और हार साझा होती है

बॉलिवुड में बड़े बजट की फीमेल सेंट्रिक ऐक्शन फिल्म की मांग बहुत समय से उठ रही थी, लेकिन आलिया भट्ट की अल्फा के रूप में जब ऐसी फिल्म आई तो वह नहीं चली। नायिका प्रधान फिल्मों की लड़ाई पर इसके असर पर तापसी कहती हैं, 'इस मामले में एक की जीत हम सबकी जीत होती है, क्योंकि जब एक फीमेल सेंट्रिक फिल्म चलती है तो लोगों को साहस मिलता है कि हां, ऐसी पिक्चर चल सकती है। उसी तरह से जब एक नहीं चलती है, खासकर बड़े बजट की नहीं चलती तो नुकसान भी हम सबका होता है। इसलिए, बुरा लगता है कि यार, चलनी चाहिए थी। लोग बोलते हैं कि अच्छी फिल्में चलती हैं तो क्या हीरो सेंट्रिक सारी ऐक्शन फिल्में कमाल की ही होती हैं? वे क्या बहुत बढ़िया थीं, तभी चलीं? ऐसा जरूरी नहीं है। हीरो वाली काफी औसत बिग स्केल फिल्में भी चल जाती हैं, मगर दुर्भाग्य से हमें वह छूट नहीं होती। हम औरतों की कहानियां उन्नीस-बीस नहीं हो सकती। उसे इक्कीस होना पड़ेगा, तभी चलेगी।

कनिका और मैं एक-दूसरे को समझते हैं

गांधारी की लेखिका-निर्माता कनिका ढिल्लों संग तापसी मनमर्जियां, हसीन दिलरुबा, रश्मि रॉकेट, फिर आई हसीन दिलरुबा जैसी फिल्मों में भी साझेदारी कर चुकी हैं। इस बॉन्डिंग पर वह बताती हैं, 'कनिका ने मनमर्जियां की कहानी मुझे सीन के बीच में गाना तक सुनाकर पूरे डिटेल में नरेट की थी। जबकि, गांधारी में सिर्फ चार लाइन में स्टोरी बताई कि ये कहानी है। अगर तू कर रही है तो मैं आगे लिखती हूं, तो हमारी आपसी समझ और एक दूसरे पर इतना भरोसा बन गया है कि कनिका को पता है कि मैं क्या करना चाहूंगी और क्या नहीं करूंगी। वहीं, मुझे भी ये पता है कि अगर इसने मुझे दो लाइन भी सुना दी हैं ना, तो उसके बाद ये लिख लेगी। वहीं, निर्माता के तौर पर वह फिल्म को बेस्ट तरीके से बनाएगी। मुझे कोई लड़ाई नहीं लड़नी पड़ेगी। वो कनिका लड़ लेगी तो मैं काफी रिलैक्स होती हूं।'

संजय लीला भंसाली की अगली फिल्म में करीना कपूर की एंट्री पक्की

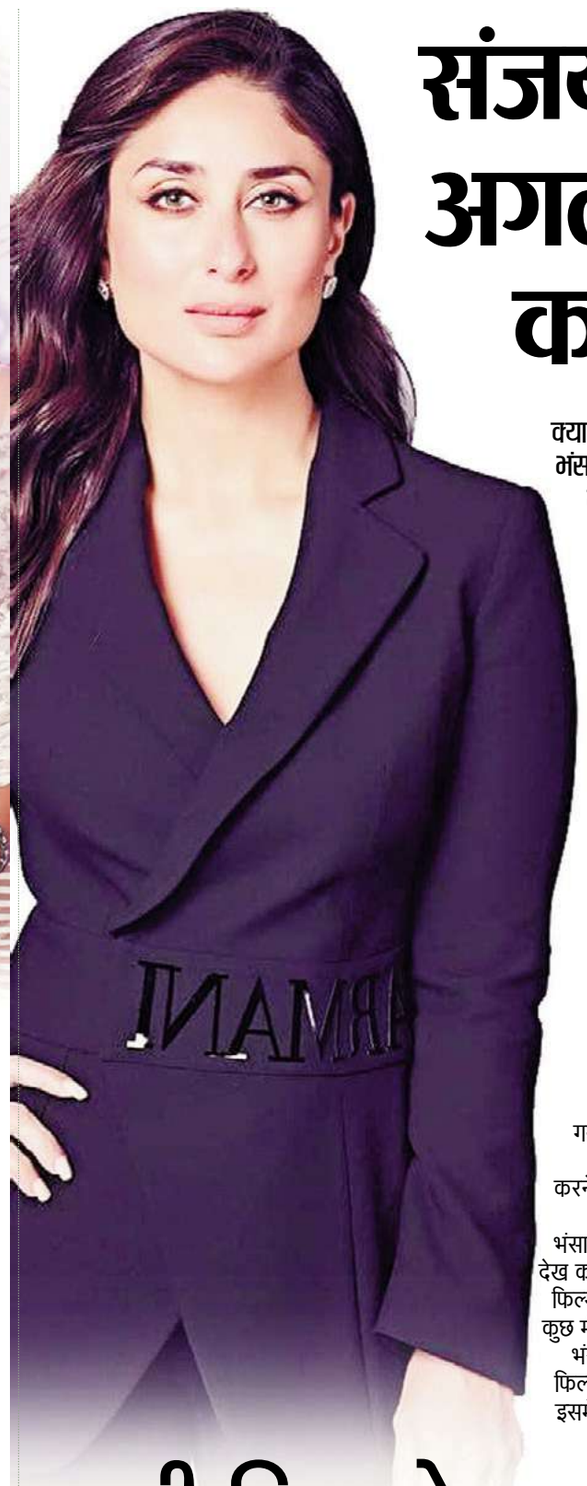

क्या करीना कपूर को संजय लीला भंसाली की अगली फिल्म में देखा जाएगा? क्या भंसाली की कोई फिल्म करीना साइन करने वाली हैं? क्या करीना और भंसाली का दो दशक पुराना मनमुटाव दूर हो गया है? कुछ ऐसे ही सवाल बी-टाउन में पूछे जा रहे हैं। वजह है कि करीना कपूर खान को भंसाली के दफ्तर के बाहर स्पॉट किया गया।

दो दशक पुराने गिले शिकवे दूर हो गए

फिल्म 'देवदास' के बाद से करीना कपूर खान और भंसाली के बीच मतभेद शुरू हो गए। दोनों को कभी साथ काम करते नहीं देखा गया। करीब दो दशक बाद आज अचानक करीना कपूर खान को भंसाली के ऑफिस के बाहर देखा गया तो अटकलें लगने लगीं कि दोनों साथ में किसी फिल्म के लिए काम करने वाले हैं। चर्चा ये भी है कि दोनों ने अपने पुराने मतभेद भुला दिए हैं। भंसाली के ऑफिस के बाहर करीना को देख कयास लग रहे हैं कि वे निर्देशक की फिल्म में नजर आ सकती हैं। बीते दिनों कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया था कि भंसाली एक पौराणिक जंगल एडवेंचर फिल्म बना रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक इसमें करीना कपूर खान नजर आएंगी। उनके अलावा साउथ एक्टर धनुष भी लीड रोल में होंगे। फिल्म के निर्देशन की कमान पीएस मित्रन संभालेंगे। हालांकि, आधिकारिक रूप से अभी ऐसी कोई जानकारी सामने नहीं आई है।

क्यों हुई करीना और भंसाली में अनबन?

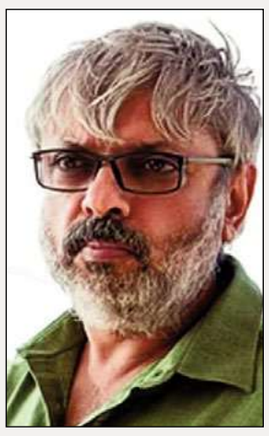

संजय लीला भंसाली ने साल 2002 में फिल्म 'देवदास' बनाई थी। कथित तौर पर इस फिल्म के लिए करीना कपूर को पारो की भूमिका के लिए अप्रोच किया था। अभिनेत्री ने स्क्रीन टेस्ट भी दिया था। हालांकि, बाद में पारो के रोल के लिए भंसाली ने ऐश्वर्या राय बच्चन को चुन लिया। 2002 में फिल्मफेयर को दिए एक इंटरव्यू में करीना ने कहा था, 'उन्होंने मेरे साथ जो किया, वह गलत था। उन्होंने 'देवदास' (2002) के लिए मेरा स्क्रीन टेस्ट लिया। मुझे साइनिंग अमाउंट दिया और फिर किसी और को ले लिया। यह गलत था और मुझे इसलिए ज्यादा बुरा लगा, क्योंकि मैं अपने करियर की शुरुआत में थी'।

साउथ इंडस्ट्री के लोग अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हुए हैं

बरेली की बर्फी, थप्पड़ और तमाशा जैसी फिल्मों में काम कर चुकी अभिनेत्री नैला ग्रेवाल आगामी बहुप्रतीक्षित साइंस-फिक्शन और एक्शन ड्रामा फिल्म 'राका' में नजर आएंगी। अभिनेत्री ने बताया कि साउथ इंडस्ट्री के लोग अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हुए हैं और अपनी फिल्मों के जरिए इसको दिखाते हैं। अभिनेत्री ने बातचीत में कहा, 'मुझे लगता है कि साउथ इंडस्ट्री की खूबसूरती यह है कि वे अपने कल्चरल ताने-बाने और जड़ों से बहुत जुड़े रहते हैं। वे अपनी फिल्मों और स्क्रिप्ट के जरिए अपने कल्चरल ताने-बाने को इतनी खूबसूरती से दिखाते हैं, जिससे हर तरह के लोग उनके सिनेमा की ओर खींचा चला आता है। मुझे लगता है कि यही उनकी खूबसूरती है कि वे असल में जैसे हैं, वैसे ही है। साथ ही, उनकी राइटिंग और स्क्रिप्टिंग भी बहुत अच्छी है।' नैला ग्रेवाल ने फिल्म 'राका' की हिंट देते हुए कहा, 'आपने अभी तक फिल्म को लेकर जो कुछ भी देखा, उससे भी कई ज्यादा एक्साइटिंग होने वाला है। यह मेरे लिए बहुत खास सफर है।' अभिनेत्री ने अपने सिनेमाई सफर को याद करते हुए कहा कि वे खुद को खुशकिस्मत मानती हैं कि शुरुआत में ही उन्होंने रणबीर कपूर, रवि किशन समेत कई टैलेंटेड एक्टर्स के साथ काम किया है, जिनसे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। उन्होंने कहा, 'राका भी बहुत बढ़िया फिल्म है और इसमें मैंने प्रेरणादायक एक्टर्स के साथ काम किया है। जब आप दिलचस्प एक्टर्स के साथ काम करते हैं, तो एक अलग लेवल का चैलेंज होता है। वह चैलेंज प्रोजेक्ट, आपके कैरेक्टर और आपके पूरे अनुभव को और भी बेहतर बनाता है। इतनी शानदार स्टार कास्ट के साथ काम करने के बारे में मुझे ऐसा ही लगता है।' यह फिल्म टाइम ट्रैवल, मल्टीवर्स और पुनर्जन्म जैसे अनोखे और बड़े कॉन्सेप्ट पर आधारित बताई जा रही है।

माही विज ने बताया क्यों छोड़ा था 'सहर होने को है

टीवी की जानी-मानी एक्ट्रेस माही विज इन दिनों 'बिग बॉस 20' को लेकर चर्चा में हैं। सलमान खान के होस्ट किए जाने वाले इस रियलिटी शो में माही की एंट्री ने उनके फैंस को काफी उत्साहित किया है। शो में आने के बाद जहां दर्शक उनके अलग-अलग अंदाज को देखने के लिए उत्सुक हैं, वहीं उनके पिछले शो 'सहर होने को है' से बाहर होने को लेकर भी कई तरह की बातें सामने आ रही थीं। ऐसी चर्चा थी कि माही ने 'बिग बॉस' का हिस्सा बनने के लिए अपना पिछला शो छोड़ा है। अब एक्ट्रेस ने खुद इस बात पर चुप्पी तोड़ी है और बताया कि दोनों फैसलों का आपस में कोई लेना-देना नहीं है। बातचीत में माही विज ने कहा, ''मैं 'सहर होने को है' को जनवरी में ही छोड़ने का फैसला ले चुकी थीं। हालांकि, शो छोड़ने की प्रक्रिया में काफी समय लग गया। मेरा बाहर निकलना अचानक लिया गया फैसला नहीं था। शो के क्रिएटिव्स भी मुझे इतनी जल्दी छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए शो से अलग होने में मुझे समय लगा।''

माही ने कहा, ''सच कहूं तो मैं खुद भी उस समय शो छोड़ने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं थीं। 'सहर होने को है' मेरे दिल के काफी करीब था। मैं इस शो से भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई थीं और इसलिए इसे छोड़ना मेरे लिए आसान नहीं था। हालांकि, मैंने 'बिग बॉस' में एंट्री लेने के लिए अपना पिछला शो नहीं छोड़ा है। 'बिग बॉस' का ऑफर मुझे काफी बाद में मिला था।'' माही ने कहा, ''मैंने बहुत पहले ही शो छोड़ दिया था और 'बिग बॉस' का ऑफर मुझे बाद में आया। ऐसे में पुराने शो से बाहर होने और नए रियलिटी शो में आने के बीच सीधा संबंध जोड़ना सही नहीं है। मैं पहले ही अपना फैसला ले चुकी थीं और 'बिग बॉस' का फैसला बाद में आया।''

'बिग बॉस 20' का हिस्सा बनने को लेकर भी माही काफी उत्साहित नजर आईं। उन्होंने कहा, ''जिंदगी में समय-समय पर कुछ नया आजमाते रहना चाहिए। 'बिग बॉस' शो को देखना मुझे काफी पसंद हैं, लेकिन खुद इसमें आने को लेकर पहले कभी इतनी सीरियस नहीं थीं। इस बार मुझे खुद समझ नहीं आया कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि मैंने शो का हिस्सा बनने के लिए हां कह दी।''

माही ने कहा, ''हर काम का एक सही समय होता है और शायद मेरे लिए 'बिग बॉस' करने का समय अब आया है। यही वजह है कि इस बार मैंने इस मौके को स्वीकार कर लिया। अब मैं यह देखने के लिए भी उत्साहित हूं कि घर के अंदर मेरा सफर किस तरह आगे बढ़ता है।'' उन्होंने कहा, ''बिग बॉस' के घर में परिस्थितियां बदलती रहती हैं। अभी मैं नहीं जानती कि घर के अंदर मेरे व्यवहार का कौन सा रूप सामने आएगा। ऐसे में दर्शकों को मेरा एक ऐसा अंदाज भी देखने को मिल सकता है, जिसे उन्होंने पहले नहीं देखा होगा।''

जूही मूई के ऑफ एयर होने से टूटा ईशा सिंह का दिल

टीवी एक्ट्रेस ईशा सिंह के लिए 'जूही मूई' सिर्फ एक सीरियल नहीं था, बल्कि ऐसा सफर था जिसमें उन्होंने अपने किरदार के साथ खुद को भी काफी हद तक जोड़ा। यही वजह है कि जब इस शो के ऑफ एयर होने की खबर सामने आई, तो ईशा के लिए इसे स्वीकार करना आसान नहीं रहा। एक्ट्रेस का कहना है कि वह इस कहानी और अपने किरदार को अभी और आगे ले जाना चाहती थीं। उन्हें लगता है कि अभी किरदार में बहुत कुछ ऐसा था, जिसे पर्दे पर दिखाया जा सकता था। शो के खत्म होने से वह दिल से काफी दुखी हैं, लेकिन इस सफर से मिली यादों और दर्शकों के प्यार को हमेशा अपने साथ रखेंगी। आईएएनएस को दिए एक एक्सक्लूसिव बयान में ईशा ने शो के बंद होने पर अपनी भावनाएं साझा कीं। उन्होंने कहा, ''मैं इस समय बेहद दुखी हैं, क्योंकि मैं चाहती थी कि यह सफर अभी जारी रहे। बतौर एक्ट्रेस मेरे पास किरदार को लेकर अभी बहुत कुछ करने और समझने की गुंजाइश थी। मैं इस भूमिका में खुद को और ज्यादा तलाशना चाहती थी और दर्शकों को भी किरदार के अलग-अलग पहलू दिखाना चाहती थी। हर सफर इंसान को कुछ न कुछ सिखाकर जाता है।''

ईशा ने कहा, ''अगर 'जूही मूई' का ये सफर सच में खत्म हो रहा है, तो मैं इसे सिर्फ शो के बंद होने के तौर पर याद नहीं करना चाहती। मेरे लिए इस शो से जुड़ा प्यार, सेट पर बिताया वक्त, काम करने वाले लोग और बनी हुई यादें ज्यादा मायने रखती हैं। मैं उन फैंस का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं, जो शो को बचाने के लिए लगातार आवाज उठा रहे हैं। अगर मेरे फैंस अभी भी शो को बचाने की कोशिश कर रहे हैं तो मैं उनकी आवाज सुन रही हूं और उनकी इस कोशिश के लिए दिल से आभारी हूं।''

एक्ट्रेस ने कहा, ''जब कोई कलाकार लंबे समय तक किसी शो का हिस्सा रहता है तो वह प्रोजेक्ट धीरे-धीरे उसकी जिंदगी का हिस्सा बन जाता है। कलाकार सिर्फ कैमरे के सामने लाइन्स बोलकर अपना काम पूरा नहीं करता। वह किरदार को समझता है, उसकी भावनाओं को महसूस करता है और कई-कई घंटे सेट पर बिताता है। 'जूही मूई' का अनुभव मेरे लिए कुछ ऐसा ही रहा। मैंने शो को अपनी परफॉर्मेंस के साथ-साथ अपना समय और पूरी एनर्जी दी है। इसलिए अचानक यह सुनना कि शो खत्म होने जा रहा है, मेरे लिए काफी भावुक कर देने वाला है।''

दमण के ग्रामीण और शहरी विस्तारों के विभिन्न पंडालों में आज विराजेंगे गणपति बप्पा

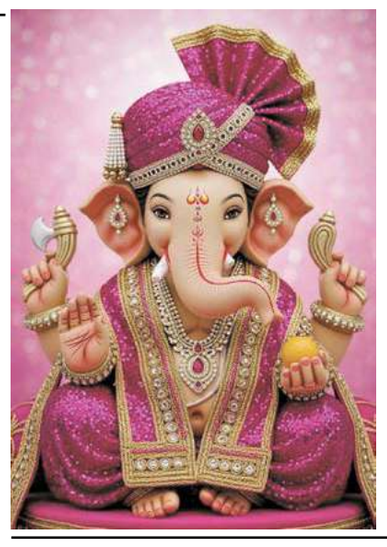

- विघ्नहर्ता भगवान गणेश के स्वागत के लिए सजे रंग-बिरंगे पंडाल

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 13 सितंबर। गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर दमण के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में आज विभिन्न स्थानों पर गणपति बप्पा की प्रतिमाओं की स्थापना की जाएगी। भगवान गणेश के स्वागत को लेकर शहर और गांवों के विभिन्न पंडालों को आकर्षक एवं रंग-बिरंगी सजावट से सजाया गया है। जगह-जगह विद्युत रोशनी, फूलों और सजावटी सामग्री से भव्य पंडाल तैयार किए गए हैं। गणेशोत्सव को लेकर श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। गणपति मंडलों और आयोजन समितियों द्वारा प्रतिमाओं की स्थापना, पूजा-अर्चना और आरती की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। आज शुभ मुहूर्त में विधि-विधान के साथ भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित कर उनका स्वागत किया जाएगा। इसके बाद पंडालों में नियमित रूप से पूजा, आरती और धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। गणेशोत्सव को लेकर बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक में उत्साह का माहौल है। कई पंडालों में आकर्षक थीम और सजावट श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। गणपति बप्पा के आगमन को लेकर मंडलों ने ढोल-नगाड़ों और भक्ति संगीत के साथ शोभायात्रा निकालने की भी तैयारी की है। विघ्नहर्ता भगवान गणेश से सुख, समृद्धि और शांति की कामना को लेकर बड़ी संख्या में श्रद्धालु पंडालों में पहुंचेंगे। पूरे दमण में अगले कई दिनों तक गणेश भक्ति और उत्सव का माहौल बना रहेगा।

दमण न्यायालय में आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में 32 मामलों का किया गया निपटारा

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 13 सितंबर। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण दमण की सदस्य सचिव श्रीमती प्रणिता पी. भारसकडे - वाघ की अध्यक्षता में शनिवार को मोटी दमण स्थित न्यायालय परिसर में वर्ष की तीसरी राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। जिसमें कुल 577 मामलें सुनवाई के लिए लोक अदालत के समक्ष रखे गये, जिसमें से 32 मामलो का निपटारा हुआ। जबकि 58,01,529 रूपए का सेटलमेंट हुआ। इस दौरान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण दमण की सदस्य सचिव/सीजेएम श्रीमती प्रणिता पी. भारसकडे-वाघ ने कहा कि लोक अदालत का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों को त्वरित, सुलभ और आपसी समझौते के आधार पर न्याय उपलब्ध कराना था। आयोजित राष्ट्रीय लोक अदालत में वादकारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इस दौरान कुल 2 बेंचों का गठन किया गया। जिनमें 32 मामलों का सफलतापूर्वक निस्तारण किया गया। इन मामलों में कुल 58,01,529 रुपये की संचयी सेटलमेंट राशि पर समझौते संपन्न हुए। लोक अदालत में निस्तारित कुल 32 मामलों में 4 मामले प्री-लिटिगेशन स्तर के तथा 28 मामले न्यायालयों में लंबित थे। सभी मामलों का आपसी सहमति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में समाधान किया गया। नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट की धारा 138 (चेक बाउंस) से जुड़े 11 लंबित मामलों का निस्तारण किया गया। जिनमें कुल 34,21,011 रुपये की राशि पर समझौता हुआ। वहीं, पारिवारिक एवं वैवाहिक विवादों के 11 मामलों का भी आपसी सहमति से समाधान किया गया। इन मामलों में 12,12,600 रुपये की सेटलमेंट राशि तय हुई। इसके अलावा सिविल मामलों, जिनमें मूल वाद और उत्तराधिकार संबंधी मामले शामिल थे, के 5 मामलों का निस्तारण करते हुए 11,15,418 रुपये की राशि पर समझौते किए गए। बैंक रिकवरी एवं वित्तीय मामलों के 4 मामलों में कुल 52,500 रुपये की रिकवरी एवं समझौता राशि तय की गई। वहीं, 1 आपराधिक शमनीय मामले का भी लोक अदालत में आपसी सहमति से समाधान किया गया। विधिक सेवा प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि लोक अदालत के माध्यम से लोगों को लंबे समय तक चलने वाले मुकदमों से राहत मिलती है। साथ ही, विवादों का आपसी सहमति से समाधान होने के कारण पक्षकारों के बीच संबंध भी मधुर बने रहते हैं। तृतीय राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन में स्थानीय न्यायपालिका, न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं तथा विभिन्न वित्तीय संस्थाओं और बीमा कंपनियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सिलवासा-खरडपाडा की गीप इंडस्ट्रीज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में हुआ हादसा, एक युवक की मौत

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा 13 सितंबर। सिलवासा के बीनानजी इंडस्ट्रियल एस्टेट, खरपाड़ा स्थित गीप इंडस्ट्रीज इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में हादसा होने से 20 वर्षीय युवक की मौत होने का मामला सामने आया है। मृतक की पहचान गुजरात के कपराडा निवासी केतन के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि कंपनी में शॉर्ट सर्किट के कारण हुए हादसे में केतन की जान चली गई। घटना के बाद मृतक के परिवार ने कंपनी प्रबंधन की कथित लापरवाही को लेकर प्रशासन से उचित कार्रवाई करने की मांग की है। परिजनों का आरोप है कि सुरक्षा व्यवस्था में लापरवाही के कारण यह हादसा हुआ। मामले की गंभीरता को देखते हुए नरोली पुलिस स्टेशन के प्रभारी शशि कुमार सिंह द्वारा आगे की जांच की जा रही है। पुलिस जांच के बाद ही हादसे के वास्तविक कारण और जिम्मेदारी को लेकर स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

सिलवासा में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजनः 395 मामलों का हुआ निपटारा

■ 2,296 मामले लोक अदालत के समक्ष रखे गए, 2.31 करोड़ रूपये से अधिक की राशि का हुआ सेटलमेंट

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा 13 सितंबर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण दादरा नगर हवेली के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण दादरा नगर हवेली की ओर से शनिवार 12 सितंबर 2026 को सिलवासा जिला न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस लोक अदालत में विभिन्न प्रकार के मामलों को आपसी सहमति एवं समझौते के माध्यम से निपटाने का प्रयास किया गया। इसमें चेक बाउंस, कामगार विभाग, मोटर दुर्घटना, जमीन अधिग्रहण, रिट याचिका, वैवाहिक विवाद, फौजदारी कंपाउंडेबल मामले, बैंक, उपभोक्ता मामले, ग्राम पंचायत, नगरपालिका तथा प्री-लिटिगेशन मामलों सहित विभिन्न प्रकरण शामिल रहे। लोक अदालत के माध्यम से विवादों का शांतिपूर्ण एवं त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पक्षकारों को आपसी समझौते के लिए प्रेरित किया गया। विशेष रूप से पारिवारिक एवं अन्य विवादों को आपसी भाईचारे और सहमति से सुलझाने का प्रयास किया गया। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 2,296 मामले लोक अदालत के समक्ष रखे गए, जिनमें से 395 मामलों का लोक अदालत के माध्यम से निपटारा किया गया। इन मामलों में समझौते के आधार पर कुल 2,31,19,281 रूपये की राशि का सेटलमेंट हुआ। राष्ट्रीय लोक अदालत के आयोजन का उद्देश्य आम नागरिकों को सरल, सुलभ और कम समय में न्याय उपलब्ध कराना तथा आपसी सहमति के माध्यम से लंबित विवादों का समाधान सुनिश्चित करना रहा। सिलवासा न्यायालय परिसर में आयोजित लोक अदालत में पहली पैनल में डालसा चेयरपर्सन और प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्रीमती विभा पी. इंग्ले और दूसरी पैनल में डालसा मेंबर सेक्रेटरी और सीजेएम तथा सिविल जज सीनियर डिवीजन श्री सचिन आर. निकम ने मुख्य रूप से उपस्थित रहकर निर्णायक भूमिका निभाई।

हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत दीव में हिंदी वाक प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 13 सितंबर। संघ प्रदेश प्रशासन दीव के राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत 11-09-2026 को हिंदी वाक प्रतियोगिता का समग्र शिक्षा सभागार दीव में सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के साथ-साथ प्रशासन के कर्मचारियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता में विभिन्न वर्गों के प्रतिभागियों ने पूर्व निर्धारित विभिन्न विषयों पर अपने विचारों को प्रभावशाली एवं सशक्त ढंग से प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों ने हिंदी भाषा के प्रति अपनी अभिरुचि, अभिव्यक्ति-कौशल एवं भाषायी दक्षता का परिचय देते हुए प्रतियोगिता को रोचक एवं ज्ञानवर्धक बनाया। इस अवसर पर लेखा निदेशक एवं राजकीय पॉलिटेक्निक के प्राचार्य गजवानी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में राजकीय महाविद्यालय के सहायक हिंदी प्रोफेसर हर्षद चौहान एवं राजभाषा विभाग के प्रभारी हिंदी अधिकारी शंकर सिन्हा उपस्थित रहे। उन्होंने प्रतिभागियों के प्रस्तुतीकरण, विषय-वस्तु, भाषा-शैली, उच्चारण एवं अभिव्यक्ति के आधार पर उनका मूल्यांकन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में उपस्थित अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया और अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंटकर करने के उपरांत प्रतियोगिता की शुरुआत की गई। प्रतिभागियों के प्रदर्शन के उपरांत मुख्य अतिथि गजवानी ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी की प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों को अधिकाधिक हिंदी शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। निर्णायक हर्षद चौहान ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि वक्तव्य प्रस्तुत करते समय प्रतिभागियों को अपने उच्चारण के साथ-साथ विषयवस्तु पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने सभी प्रतिभागियों के प्रदर्शन की सराहना की और उपयोगी सुझाव दिए । उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि वे इसी प्रकार भविष्य में भी हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहें। राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि एवं प्रेम को बढ़ावा देना तथा हिंदी भाषा में अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम के अंत में प्रभारी हिंदी अधिकारी शंकर सिन्हा ने मुख्य अतिथि, निर्णायकगण, उपस्थित शिक्षकों एवं प्रतिभागियों तथा राजभाषा विभाग के हिंदी टंकण अशोक भंडारी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने सम्पूर्ण हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों एवं प्रतिभागियों के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम के समापन अवसर पर निर्णायकगण द्वारा दिए गए परिणामों की घोषणा की गई। प्रतिभागियों को सूचित किया गया कि प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन 18 सितंबर 2026 को सुबह 10:30 बजे समग्र शिक्षा सभागार, शिक्षा कार्यालय में किया जाएगा और विजेता प्रतिभागियों को दीव समाहर्ता राहुल देव बूरा द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया गया कि वे निर्धारित तिथि, समय एवं स्थल पर अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें।

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)